



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 2, February 2024

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.423



9940 572 462



6381 907 438



ijirset@gmail.com



www.ijirset.com

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में मानवाधिकार की भूमिका

¹Dr. Arun Sahriya & ²Dr. Naveen Tewari

^{1,2}Professor, Dr. Bhim Rao Ambedkar Govt. College, Sriganganagar, Rajasthan, India

सार

मानव अधिकार इतिहास की एक नई अवधारणा है। प्राचीन और मध्ययुगीन काल में, शासक शासन करने के लिए एक दिव्य अधिकार का दावा करते थे और सभी अधिकार उन्हीं के पास थे। प्रजा जो भी प्राप्त करती थी, वह दान था, अधिकार नहीं। धार्मिक परंपराओं ने दया और दान को बढ़ावा देने की मांग की है, लेकिन स्वतंत्रता या समानता के अधिकार की अवधारणा नहीं है। कुछ समाजों में कभी-कभी अपने सदस्यों को समानता का कुछ स्तर प्रदान किया है लेकिन इसे अन्य समाजों के सदस्यों के लिए विस्तारित नहीं किया है और न ही व्यक्तिगत अधिकारों की कोई अवधारणा थी।

अंग्रेजों ने 1215 के मैग्ना कार्टा में, कुछ महत्वपूर्ण मानव अधिकारों के मूल का पता लगाया, जिन्हें अंग्रेजी सामंतों ने किंग जॉन से हासिल किया था। इनमें बंदी प्रत्यक्षीकरण, याचिका का अधिकार और कानून की उचित प्रक्रिया भी शामिल हैं। महान चार्टर की धारा 39 को निम्न का स्रोत होने का श्रेय दिया जाता है:

"उसके साथियों या देश के कानून द्वारा वैध फैसले को छोड़ कर किसी भी स्वतंत्र व्यक्ति को न तो गिरफ्तार किया जा सकता है ना ही कैद या अपराधी या गैरकानूनी घोषित किया जाएगा और उसे निर्वासित या किसी भी तरह से पीड़ित या उस पर हमला नहीं किया जा सकता या उस पर हमला करने के लिए किसी को भेजा नहीं जाएगा।"

परिचय

मैग्ना कार्टा को कुछ महत्वपूर्ण कानूनी अवधारणाओं के बीज रोपने का श्रेय दिया जा सकता है, लेकिन ये उसके रईसों के लिए प्रभु द्वारा दी गई एक रियायत बने रहे। राजा ने जो स्वीकार किया, हालांकि दबाव के अंतर्गत ऐसा किया, वह उसकी शक्तियों का एक हिस्सा था, जिसका स्रोत और संरक्षक वह बना रहा।

इस विश्वास में परिवर्तन कि राज्य सम्राट की एक जागीर होने की बजाय लोगों द्वारा बनाया गया एक संघ था, मानव अधिकारों के विकास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। 17 वीं सदी में, यूरोप में जब राज्य पर धर्म का प्रभुत्व होने लगा, उस समय दिव्य अधिकार के सिद्धांत पर प्रश्न उठे और इस पर आक्रमण शुरू किया गया। यूरोप (1618-1648) में कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटों के बीच तीस साल के युद्ध की वजह से आई तबाही ने राजनीतिक विचारकों को राज्य के अस्तित्व के लिए एक गैर-धार्मिक आधार तैयार करने के लिए मजबूर किया। इसने सामाजिक अनुबंध के सिद्धांत को जन्म दिया, जो मानता है कि लोगों ने एक साथ मिलने और एक दूसरे के साथ मिलकर या अपनी आपसी सुरक्षा के लिए शासक के साथ एक सामाजिक अनुबंध में प्रवेश किया।

लोगों, या कम से कम आभिजात्य वर्ग के, राजशाही का चयन करने में हस्तक्षेप करने का एक प्रारंभिक उदाहरण 17 वीं सदी के अंत में ब्रिटेन में दिखा था। वर्ष 1688 की शानदार क्रांति में अंग्रेजों ने राजा जेम्स द्वितीय को उखाड़ फेंका और, संसद के अधिकार से विधेयक पारित कर नीदरलैंड के विलियम और मरियम को सिंहासन की पेशकश की। इस प्रकार, राजशाही बनी रही, लेकिन उसने अपना देवत्व खो दिया था।^[1,2,3]

इस साथ ही इस विचार की दिशा में धीमी प्रगति शुरू हुई कि मनुष्य होने के नाते व्यक्ति के कुछ अधिकार हैं। शुरुआत में यह यूरोप में आभिजात्य वर्ग और अन्य स्थानों पर यूरोपीय मूल के लोगों तक ही सीमित था। एक सदी बाद अधिकार की पहली स्पष्ट घोषणा अमेरिकी स्वतंत्रता (4 जुलाई 1776) की घोषणा में हुई जब सभी मनुष्यों में समान रूप से इसका निवेश किया गया। घोषणा की प्रस्तावना में कहा गया है, "हम इस सत्य को स्वयं स्पष्ट मानते हैं कि सभी लोगों को समान बनाया जाता है, और अपने निर्माता द्वारा उन्हें कुछ अहस्तांतरणीय अधिकार दिए जाते हैं, जिनका ये जीवन, स्वाधीनता और खुशी के लिए अनुसरण करते हैं।"

यह घोषणा भी समान रूप से महत्वपूर्ण है कि सरकार को शासन करने का अधिकार अपने शासितों की सहमति से मिलता है। यह सामाजिक अनुबंध के सिद्धांत का एक स्पष्ट और मुखर आवेदन था। इसे केवल शासक के चयन में ही नहीं बल्कि एक राज्य के निर्माण में भी लागू किया गया था। ऐसा क्रांतिकारी कदम केवल नई दुनिया में ही जगह ले सकता है।

1789 के मानव अधिकारों की घोषणा

लेकिन पुरानी दुनिया इसके प्रभाव से बच नहीं सकी। अमेरिकी क्रांति के तुरंत बाद फ्रांस में एक विशाल क्रांति आई थी। फ्रांसीसी क्रांति ने न केवल यूरोप के सबसे शक्तिशाली शासक परिवार को उखाड़ फेंका है, बल्कि इस पर दूसरों का भी ध्यान आकृष्ट किया। क्रांतिकारियों ने मनुष्यों और नागरिकों के अधिकारों की घोषणा को अपनाया, और व्यक्तियों को स्वतंत्रता, संपत्ति, सुरक्षा और उत्पीड़न के प्रतिरोध के लिए कुछ "प्राकृतिक और अहस्तांतरणीय अधिकार", दिये। इसने घोषणा की कि "मानव स्वतंत्र जन्म लेते हैं और स्वतंत्र तथा बराबर अधिकार रखते हैं। सामाजिक भेद केवल आम अच्छाई में पाया जा सकता है।" इसके बाद इसने संप्रभुता के मुद्दे को संबोधित किया, "संप्रभुता राष्ट्र में रहती है और किसी भी व्यक्ति के अधिकार इसी से उत्पन्न होते हैं।" दिव्य अधिकार बाहर निकाल दिया गया। लेकिन क्या ये क्रांतिकारी मानव अधिकार में विश्वास रखते थे या उनका संघर्ष सत्तारूढ़ शासन के खिलाफ एक राजनीतिक संघर्ष था?

इन घोषणाओं का इजहार किया गया लेकिन इसने सभी पुरुषों और निश्चित रूप से महिलाओं के लिए समान अधिकार सुनिश्चित नहीं किए। अभी भी यूरोप और अमेरिका में गुलामी वैध थी और औपनिवेशिक विजय समय का आदेश था। यहाँ तक कि गोरों में भी, वर्ग समाज का आधार था। समानता की मांग पुराने अभिजात वर्ग और राजनीतिक सत्ता में हिस्सेदारी के साथ नए-नए धनी बने लोगों की समता के लिए थी। इसमें मानव कोण अभी भी नहीं था। लेकिन घोषणाओं ने लोगों की सोच में बदलाव उत्पन्न किया। उन्नीसवीं सदी में गुलामी को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया गया, लेकिन सामाजिक स्तरीकरण के अन्य रूप जारी रहे। एक बार फिर से युद्ध छिड़ा, जल्दी-जल्दी दो युद्ध, और 1917 में रूस में एक क्रांति ने परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया था। यूरोप के वर्ग संरचना की तबाही दो विश्व युद्धों के द्वारा टूट गई। नाजियों की ज्यादतियों ने भी यूरोप में नस्लवाद के क्रूर चेहरे को उजागर किया।

सार्वभौम मानव अधिकारों की घोषणा, 1948

युद्ध की इस बीमारी से दुनिया को बचाने के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र का गठन किया गया था। इनमें से एक मानव अधिकारों को बढ़ावा दे रहा था। 1946 में, संयुक्त राष्ट्र ने मानव अधिकारों पर एक आयोग की स्थापना की जिसने दो साल की वार्ता के बाद मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा को तैयार किया। यह सभी मनुष्यों की समानता की पहली अंतरराष्ट्रीय पावती थी। यूडीएचआर के अनुच्छेद 1 में कहा गया है: "सभी मनुष्य स्वतंत्र पैदा होते हैं, और गरिमा और अधिकारों में समान हैं।" यूडीएचआर ने आगे कहा है कि ये अधिकार "जाति, रंग, लिंग, भाषा, धर्म, राजनीतिक या अन्य विचार, राष्ट्रीय या सामाजिक मूल, संपत्ति, जन्म या अन्य स्थिति" के भेदभाव के बिना हैं। 10 दिसंबर, जिस दिन संयुक्त राष्ट्र महासभा ने यूडीएचआर को अपनाया, मानव अधिकार दिवस के रूप में मनाया जाता है।

यूडीएचआर समकालीन दुनिया के लिए एक क्रांतिकारी विचार था, और अपने समय से आगे भी था। मानवाधिकार आयोग में विचार-विमर्श मुश्किल था। यह एक ऐसी दुनिया थी जिसमें अभी भी औपनिवेशिक साम्राज्य कायम था और एक सैद्धांतिक अवधारणा के बावजूद मानव समानता का वर्चस्व अभी तक कड़ियों के द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था। प्रलय से पश्चिमी दुनिया शर्मिंदा हो सकती थी लेकिन अभी भी नस्लवाद इसमें व्याप्त था। कॉलोनियों से अमेरिका में अफ्रीकी मूल के लोगों के खिलाफ भेदभाव को दूर करने के लिए सुझाव थे लेकिन उनकी अपील को नजरअंदाज कर दिया गया। बहरहाल, सम्मेलन में बुद्धिजीवियों की एक बड़ी संख्या की भागीदारी ने सुनिश्चित किया कि यूडीएचआर में मानव अधिकारों की एक व्यापक रूपरेखा शामिल की गई थी।

यूडीएचआर आगे देखने और रास्ते बनाने के लिए उल्लेखनीय था, इसने केवल जीवन, स्वतंत्रता और व्यक्तिगत सुरक्षा तथा मुक्त आवाजाही का अधिकार, संपत्ति के स्वामित्व, विवाह जैसे मूल मानव अधिकारों, को ही नहीं, बल्कि शांतिपूर्ण विधानसभा के अधिकार स्वतंत्रता के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, चुनाव जैसे राजनीतिक अधिकारों और समान कार्य के लिए सामाजिक सुरक्षा का अधिकार, अवकाश, रोजगार, समान वेतन, स्वास्थ्य देखभाल के रूप में आर्थिक अधिकार, शिक्षा सामाजिक और नागरिक अधिकारों के माध्यम से सरकार में भागीदारी को भी सूचीबद्ध किया।

पक्ष में 48 वोट और 8 परिहार के साथ महासभा द्वारा यूडीएचआर को अपनाया गया था। किसी भी देश ने इसके खिलाफ मतदान

नहीं किया। परिहार कम्युनिस्ट देशों द्वारा किया गया था, जिन्होंने दावा किया कि आर्थिक और सामाजिक अधिकारों पर पर्याप्त जोर नहीं दिया गया था और न ही फासीवाद के पर्याप्त निंदा की गई थी। सऊदी अरब और दक्षिण अफ्रीका ने भी हिस्सा नहीं लिया। पहले ने इसलिए क्योंकि यह धार्मिक स्वतंत्रता के बारे में दुखी था और दूसरा लोकतंत्र को पचाना मुश्किल पार रहा था। संयुक्त राज्य अमेरिका आर्थिक और सामाजिक अधिकारों के साथ असहज था लेकिन इसने संकल्प के लिए मतदान किया क्योंकि यह केवल एक महासभा द्वारा "घोषणा", न होकर सुरक्षा परिषद के लिए एक बाध्यकारी प्रस्ताव था।

अतएव, एक सार्वभौमिक अवधारणा के रूप में मानव अधिकारों के जन्म का श्रेय संयुक्त राष्ट्र को दिया जाना चाहिए। इसके आगे विकास में भी संयुक्त राष्ट्र मुख्य कारक रहा है। प्रिंसटन विश्वविद्यालय के पॉल कैनेडी ने "आदमी की संसद" में तर्क दिया है कि "संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार का एजेंडा, पर्यावरण और शांति स्थापना जैसी अन्य समानांतर पटरियों की तुलना में सबसे अधिक उन्नत हुआ है।

यूडीएचआर ने एशिया और अफ्रीका के नव-स्वतंत्र देशों को मानव अधिकारों के विस्तार और सर्वव्यापीकरण पर दबाव बनाने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रस्तुत किया। 1960 के दशक में तीन प्रमुख सम्मेलन आयोजित किए गए थे। 1966 में नस्लीय भेदभाव (आईसीईआरडी) के सभी रूपों के उन्मूलन पर अंतराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था। उसी वर्ष, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर दो वाचाएं को अंतिम रूप देने के साथ विचार-विमर्श संपन्न हुआ: नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतराष्ट्रीय वाचा (आईसीसीपीआर) और आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतराष्ट्रीय वाचा (आईसीईएससीआर)। यूडीएचआर के साथ, इन्हें मानव अधिकारों का अंतराष्ट्रीय विधेयक कहा जाता है। यह दिलचस्प है कि संयुक्त राज्य अमेरिका ने आईसीईएससीआर पुष्टि नहीं की है, क्योंकि इसके आर्थिक और सामाजिक अधिकार अमेरिका की पूंजीवादी विचारधारा के साथ असंगत हैं। [4,5,6]

विडंबना यह है कि, पश्चिमी दुनिया ने, जहां मानव अधिकारों की आधुनिक अवधारणा विकसित हुई थी, शीत युद्ध के दौरान इसके आगे के विकास में रुचि खो दी है। साम्यवाद का मुकाबला करने के उनके जुनून ने उन्हें ऐसे शासनों का समर्थन करने की दिशा में ले गया, जिन्हें मानव अधिकारों में कम रुचि है। इनमें दक्षिण अफ्रीका का रंगभेदी शासन सबसे प्रबल था।

इसलिए विकासशील देशों ने मानव अधिकारों का अंतरराष्ट्रीय एजेंडा तय करने का काम संभाल लिया। दुर्भाग्य से, इन में से कुछ ही देश लोकतांत्रिक या घर में मानव अधिकारों के रक्षक होने का दावा कर सकते हैं। ऐसे माहौल में, नस्लवाद, विशेष रूप से, रंगभेद के विरोध, और फिलीस्तीन के अधिकारों को जैसे मुद्दों के अपवाद के साथ, राजनीतिक अधिकार पीछे रह गए। इसकी बजाय, उन्होंने विशेष रूप से प्रचलित सर्वव्यापी अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के में, आर्थिक और सामाजिक अधिकारों पर ध्यान केंद्रित किया।

अब मैं इस प्रक्रिया में भारत की भूमिका पर आता हूँ। जब संयुक्त राष्ट्र यूडीएचआर पर बातचीत कर रहा था, तैयार कर रहा था। हमारे संविधान ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के साथ एक संसदीय लोकतंत्र की स्थापना की, जो उस समय पश्चिम में भी सार्वभौमिक नहीं था। इसने मौलिक अधिकारों का एक व्यापक सेट का भी प्रावधान किया, जो सर्वाधिक उदार भारतीय और पश्चिमी परंपराओं से प्रेरित है, और अपने वंचितों के लिए सकारात्मक कार्रवाई का एक विस्तृत कार्यक्रम प्रदान किया है। इनसे लैस होकर भारत लक्ष्य पूर्ण उत्साह सहित वैश्विक मंच पर उतरा। उपनिवेशीकरण और नस्लवाद का विरोध इसके मानव अधिकारों के मुख्य मुद्दे थे। भारत ने विकास के अधिकार और एक नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के लिए मांग को बढ़ावा देने में विकासशील देशों का नेतृत्व किया। साम्यवादी देशों ने काफी खुशी के साथ इन विचारों का समर्थन किया। वे औपनिवेशिक विकृतियों से अछूते होने और अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के लिए जिम्मेदार नहीं होने का दावा करते हैं। इन देशों के जोरदार अभियान ने दक्षिण अफ्रीका और इसराइल के खिलाफ कई उपायों और मानवाधिकार आयोग में निगरानी तंत्र की स्थापना करने का नेतृत्व किया।

इसके बाद सोवियत संघ का पतन और शीत युद्ध का अंत हो गया था। साम्यवाद ने पूर्वी यूरोप में बहुदलीय लोकतंत्र के लिए रास्ता बनाया। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद का समापन हुआ। पश्चिमी देशों ने इन घटनाओं को लोकतंत्र और पूंजीवाद की जीत घोषित किया। अब उन्होंने बाकी दुनिया, अर्थात् एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों में इन मूल्यों का प्रसार करने का निर्णय लिया है, और मानव अधिकारों को अपनी कार्यसूची के शीर्ष पर रखा है। रंगभेद के बोझ से छुटकारा पाने के बाद, उन्होंने अपनी नैतिक सर्वश्रेष्ठता पर जोर देने के लिए मानव अधिकार को एक शक्तिशाली उपकरण बनाया है।

मानवाधिकार पर विश्व सम्मेलन, 1993

1993 में, वियेना में मानवाधिकार पर विश्व सम्मेलन आयोजित किया गया था। इसने वियेना घोषणा और कार्य योजना को अपनाया है और महिलाओं पर एक विशेष दूत की नियुक्ति और मानवाधिकार के लिए उच्चायुक्त के पद का सृजन हुआ है।

यूडीएचआर के बाद तथाकथित सकारात्मक अधिकार, अर्थात् भोजन, आश्रय, स्वास्थ्य और शिक्षा के अधिकार के रूप में मानव अधिकार की दूसरी पीढ़ी को प्रचलित किया गया था। उन्हें आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय वाचा में आगे सविस्तार वर्णित किया गया था। विकासशील देशों ने विकसित देशों से अधिक आधिकारिक विकास सहायता की मांग करने के लिए इन अधिकारों को बढ़ावा दिया। पश्चिमी देशों ने इन देशों की सरकारों को, अपने लोगों के लिए ये अधिकार प्रदान करने के लिए वाध्य करने के लिए उन पर कब्जा किया है। अब यह विकास के लिए अधिकार आधारित दृष्टिकोण बन गया है। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र की सभी गतिविधियों, विशेष रूप से अपने विकास कार्य में मानव अधिकारों को मुख्यधारा में डालने का फैसला किया है। इसका मतलब है कि सभी विकास परियोजनाओं को मानव अधिकारों के सख्त मानकों को पूरा करना होगा।

1980 के दशक में, मानव अधिकारों की एक तीसरी पीढ़ी, तथाकथित "एकजुटता का अधिकार" विकसित की गई थी। इनमें एक स्वस्थ और संतुलित पारिस्थितिकी पर्यावरण, मानव जाति की साझी विरासत के स्वामित्व का अधिकार और शांति के अधिकार शामिल हैं। इन अधिकारों ने अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में भी गति एकत्र की।

मानवाधिकार परिषद

वर्ष 2006 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने मानवाधिकार आयोग पर आयोग को समाप्त कर दिया और उसे मानवाधिकार परिषद में बदल दिया। पाया गया कि मानवाधिकार पर आयोग ध्रुवीकृत और उग्र और अंतहीन बहस का खतरा बन गया है। यह आरोप लगाया गया था कि इस पर इसराइल का जुनून सवार था और यह अन्य देशों में मानव अधिकारों के उल्लंघन पर ध्यान देना नहीं था।

परिषद आयोग की तुलना में कुछ छोटी है और सीधे महासभा को रिपोर्ट करती है। इसमें महासभा द्वारा 3 साल की अवधि के लिए राज्यों से निर्वाचित 47 सदस्य हैं। परिषद से टकराव को सहयोग को बदलने और अपने दृष्टिकोण में अधिक उद्देश्यपूर्ण और निष्पक्ष होने की उम्मीद की गई थी। पहले की चयनात्मकता पर काबू पाने के लिए एक सार्वभौमिक आवधिक समीक्षा आरंभ की गई थी। परिषद से मानव अधिकारों की रक्षा के लिए राष्ट्रीय क्षमता निर्माण में देशों की सहायता करने की उम्मीद थी। यह राष्ट्रीय सरकार के साथ काम करने की नीति थी, उसके खिलाफ नहीं। यह माना जाता था कि ये और अन्य परिवर्तन परिषद को मजबूत बनाएंगे और इसे अधिक प्रभावी बनाएंगे।

एचआरसी के अलावा, मानव अधिकारों पर प्रामाणिक ढांचे के विकास और कार्यान्वयन की निगरानी में लगे अन्य महत्वपूर्ण संगठनों में मानव अधिकारों का उच्चायुक्त (ओएचसीएचआर) कार्यालय शामिल है। ओएचसीएचआर मानवाधिकार के उच्चायुक्त (ओएचसीएचआर) के अधीन काम करती है, जिसे 4 साल के एक कार्यकाल के लिए संयुक्त राष्ट्र महासचिव (यूएनएसजी) द्वारा नियुक्त किया जाता है।

एचआरसी की मुख्य गतिविधियां हैं: प्रस्तावों को अपनाना, विशेष प्रक्रियाओं से संपर्क और सार्वभौमिक आवधिक समीक्षा का आयोजन करना। इसके प्रस्ताव बाध्यकारी नहीं हैं क्योंकि इसके पास उन्हें लागू करने के लिए कोई भी साधन नहीं है। हालांकि, यह "नाम धरने और शर्मसार करने" के अपने अभ्यास से बहुत प्रभावी ढंग से देशों को नीचा दिखाने का कार्य करता है। इसके अलावा, सीरिया पर पूछताछ आयोग जैसे मामलों में, यह आरोपों की एक संस्था का निर्माण करता है, जिन्हें हेग में अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायालय के समक्ष लाया जा सकता है। एचआरसी, वीटो के कारण गतिरोध उत्पन्न होने पर, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के लिए एक मुकदमा पूर्व कक्ष, और इसके एक विकल्प के रूप में भी कार्य करती है। एचआरसी एक साधारण बहुमत से प्रस्तावों को अपनाती है, हालांकि ज्यादातर प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किए जाते हैं। [7,8,9]

सार्वभौमिक आवधिक समीक्षा

सार्वभौमिक आवधिक समीक्षा मानवाधिकार परिषद का सबसे महत्वपूर्ण निगरानी साधन है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत 4 साल में एक बार, हर देश में मानव अधिकारों की स्थिति की समीक्षा की जाती है। यूपीआर साथी राज्यों द्वारा सहकर्म की एक समीक्षा है, लेकिन इसमें नागरिक समाज और राज्य की राष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थाएं भी भाग लेती हैं। राज्य सिफारिशें कर सकते हैं, जिन्हें ओएचसीएचआर और कुछ गैर सरकारी संगठनों द्वारा सारणीबद्ध किया जाता है और इनकी निगरानी की जाती है।

वर्तमान में, यूपीआर अपने दूसरे 4 साल के चक्र से गुजर रहा है। हालांकि यह एक स्वैच्छिक प्रक्रिया है, पर देश इसे बहुत गंभीरता से लेते हैं। पहले चक्र में सभी देशों ने भाग लिया है और दूसरे चक्र में भी सभी ने अब तक ऐसा ही किया है।

राष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थाएं

राष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थाओं (एनएचआरआईएस) को स्थापित करने में राज्यों को प्रोत्साहित करना और उनकी मदद करना ओएचसीएचआर की प्राथमिकताओं में से एक है। लगभग 150 देशों ने एनएचआरआईएस की स्थापना की है। ओएचसीएचआर, में उनसे बातचीत करने और उनके बीच बातचीत को बढ़ावा देने और ओएचसीएचआर और एचआरसी की गतिविधियों में उनकी भागीदारी को सुविधाजनक बनाने के लिए एक विशेष प्रकोष्ठ है।

संधि निकाय

अपनी नौ वैकल्पिक औपचारिकताओं (प्रोटोकॉल) के साथ कई अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार समझौतों में से 9 को, ओएचसीएचआर द्वारा मानव अधिकारों के 18 मूल उपकरणों के रूप में उपचारित किया जा रहा है। इनमें से प्रत्येक संधियों के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए एक संधि निकाय है। 9 वैकल्पिक औपचारिकताओं ने कुछ संधियों में सन्निहित मौलिक अधिकार में महत्वपूर्ण योजन किए हैं; दूसरे प्रकृति में प्रक्रियात्मक हैं और उनके कार्यान्वयन के लिए और अधिक प्रभावी निगरानी प्रदान करने की आवश्यकता है।

संधि निकाय पक्ष राज्यों द्वारा संधियों के कार्यान्वयन की निगरानी करते हैं। प्रत्येक पक्ष राज्य को समय-समय पर अपने दायित्वों को लागू करने के लिए, उसके द्वारा किए गए उपायों पर संधि निकायों को एक रिपोर्ट पेश करनी होती है। कुछ संधियों में व्यक्तियों से प्राप्त शिकायतों को संधि निकाय द्वारा सीधे सुनने की व्यवस्था की गई है। कुछ देश में पूछताछ का भी प्रावधान करती हैं। व्यक्तिगत शिकायतें और देश में पूछताछ वैकल्पिक हैं और कई पक्ष राज्यों ने या तो संधि में उनकी अवमानना की है या संधि में किए गए प्रावधान के अनुसार, उन्हें स्वीकार करने की आवश्यक घोषणा नहीं की है। विलुप्ति से सभी व्यक्तियों के संरक्षण का अंतराष्ट्रीय सम्मेलन (सीडीडी), एकमात्र संधि है, जिसमें व्यक्तियों की शिकायतों की अवमानना और देश में पूछताछ की अनुमति नहीं दी गई है, यही वजह है कि अब तक केवल 34 देशों द्वारा इसकी पुष्टि की गई है।

विशेष प्रक्रियाएं

विशेष प्रक्रियाएं मानवाधिकार परिषद द्वारा नियुक्त मानव अधिकार विशेषज्ञों द्वारा एक देश में मानवाधिकार विषयों या स्थितियों पर रिपोर्ट और सलाह देने के लिए प्रयोग किया जाने वाला एक सामान्य शब्द है, लिए आवेदन किया है। वे एक व्यक्ति या एक समूह हो सकते हैं, जो देश का दौरा करते हैं और रिपोर्ट तैयार करते हैं। वे केवल अपने अनुरोध की स्वीकृति पर ही किसी देश की यात्रा कर सकते हैं, लेकिन ओएचसीएचआर वेबसाइट उन देशों की सूची देता है, जिनका दौरा किया गया है या जिनके अनुरोध लंबित हैं, और कब से लंबित हैं, यह भी बताता है। वर्तमान में 41 विषयगत और 14 देश के लिए जनादेश हैं।

देशों के जनादेश सबसे अधिक विरोधिता वाली और विवादास्पद विशेष प्रक्रियाएं हैं। बहुत कम देश स्वेच्छा से उन के साथ सहयोग करते हैं। उनमें से ज्यादातर पश्चिम के पालतू लक्ष्य हैं। इसराइल, ज़ाहिर है, अरब देशों के लिए सबसे अधिक नापसंद की वस्तु है। वर्तमान में निम्नलिखित देश विशेष प्रक्रियाओं के अधीन हैं: बेलारूस, कंबोडिया, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, कोटे डी आइवर, इरिट्रिया, उत्तर कोरिया, हैती, ईरान, माली, म्यांमार, कब्जे वाला फिलीस्तीनी क्षेत्र, सोमालिया, सूडान और सीरिया। भारत सिद्धांत रूप में उनकी देश-विशिष्ट प्रक्रियाओं या प्रस्तावों समर्थन नहीं करता, लेकिन कुछ मामलों में उनके लिए वोट देता है।

जांच आयोग

एचआरसी में मानव अधिकारों के सकल उल्लंघन की विशिष्ट घटनाओं की जांच या तथ्य खोजने के लिए भी मिशन बनाने का प्रावधान है। ये विशेष प्रक्रियाओं की तुलना में अधिक विवादास्पद हैं। वर्तमान में, तीन देश: इरिट्रिया, उत्तर कोरिया और सीरिया, इस तरह के जांच आयोगों का सामना कर रहे हैं। इसके अलावा गाजा संघर्ष में मानव अधिकारों के उल्लंघन की जांच के लिए चौथा आयोग है। 2015 में, मानवाधिकार उच्चायुक्त के कार्यालय द्वारा, परिषद को श्रीलंका सरकार द्वारा 2009 में लिट्टे के खिलाफ अभियान के दौरान मानव अधिकारों के उल्लंघन के आरोपों की जांच का काम सौंपा गया है। भारत इस अमेरिका प्रायोजित प्रस्ताव में इस आधार पर अनुपस्थित रहा कि यह दूसरे देश में दखल देने का कार्य है और ओएचसीएचआर की क्षमता से परे चला गया है।

मानव अधिकारों पर वाद-विवाद

2006 में मानव अधिकार संस्थाओं में सुधार के बावजूद, मानवाधिकार निकायों का पर्यावरण विवादात्मक बना हुआ है और इसकी

निगरानी और कार्यान्वयन करने वाली अंतर्राष्ट्रीय मशीनरी का अत्यधिक राजनीतिकरण हो चुका है। ओएचसीएचआर एक स्वतंत्र निकाय होने का दावा करता है और एचआरसी एवं संयुक्त राष्ट्र महासभा को रिपोर्ट करती है, लेकिन ऐसा करने के लिए जवाबदेह नहीं है। इसके 1000 से कुछ अधिक के छोटे से स्टाफ में आधे से अधिक पश्चिमी देशों से है। इसके लगभग 200 मिलियन डॉलर के बजट का केवल 40% संयुक्त राष्ट्र से आता है। बाकी पश्चिमी देशों की सरकारों और नागरिक समाज के दानदाताओं से मिलने वाला स्वैच्छिक योगदान है।

यह समझने के लिए किसी को प्रतिभाशाली होने की जरूरत नहीं है कि पश्चिमी देश स्वैच्छिक योगदान और पेशेवर कर्मचारियों के माध्यम से कैसे ओएचसीएचआर की कार्यप्रणाली और एजेंडे का निर्धारण करते हैं। स्वैच्छिक योगदान संगठनों की प्राथमिकताओं और जनादेश, संयुक्त राष्ट्र की निगरानी प्रणाली के लिए उनकी जवाबदेही और कर्मचारियों की आजादी को विकृत करता है।

हमले के अधीन देश राष्ट्रीय संप्रभुता की ओट लेते हैं। पश्चिमी सरकारें रक्षा के लिए ऐसे उपायों का सहारा लेने की निन्दा करती हैं, और जोर देती हैं कि मानव अधिकारों के उल्लंघन के गंभीर मामलों को हेग में अंतरराष्ट्रीय अपराध अदालत में भेजा जाए। कुछ भी आर2पी, रक्षा की जिम्मेदारी की विवादास्पद अवधारणा का सहारा लेने की वकालत करती हैं। ये शक्तियों सुरक्षा परिषद में निहित हैं, मानवाधिकार परिषद में नहीं, जो आम सभा को रिपोर्ट करती है। सुरक्षा परिषद अब तेजी से मानव अधिकारों के उल्लंघन पर चर्चा करती है और यह जानकारी देने के लिए नियमित रूप से मानवाधिकार के उच्चायुक्त को आमंत्रित किया जाता है। 2011 में लीबिया में अपने विनाशकारी उपयोग के बाद, आर2पी संदेह के घेरे में आ गया है, लेकिन इसके अधिवक्ता अपनी बात पर अटल बने रहे और विश्वास करते हैं कि मानव अधिकारों का संरक्षण उन चार अपराधों के दायरे के आता है, जिनके लिए इसे लागू किया जा सकता है।

मानव अधिकारों के प्रवर्तन के लिए इस तरह का आक्रामक रुख अपनी अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता को नुकसान पहुँचाता है। यहाँ तक कि यूरोपीय संघ में, जहाँ सांस्कृतिक और आर्थिक एकरूपता काफी नहीं है, मानवाधिकार के यूरोपीय आयोग में इसकी आलोचना की है। यूरोप में एशिया और अफ्रीका से प्रवासियों के वर्तमान आगमन की निरंतरता ने यूरोप के लिए मानव अधिकारों की अपनी प्रतिबद्धता और अभ्यास को कम गंभीरता से आँका गया है।

कई विकासशील देशों ने व्यक्ति पर समुदाय की प्रधानता की बात कर अपने खराब मानवाधिकार रिकॉर्ड को चमकाना चाहते हैं। उनके मुताबिक समुदाय के मूल्य और सीमा को एक व्यक्ति की स्वतंत्रता पर वरीयता प्राप्त करता है। वे मानव अधिकारों के सांस्कृतिक सापेक्षवाद पर बल देते हैं और अपने राष्ट्रीय या धार्मिक मूल्यों को पश्चिमी मूल्यों से अलग रूप में प्रस्तुत करते हैं।

सशस्त्र विद्रोह का सामना करने वाले देश सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अंकुश लगाना चाहते हैं। आतंकवाद के वैश्विक विस्तार के बाद यह अब एक वैश्विक चिंता का विषय और विशेष रूप से विभाजनकारी मुद्दा है।^[10,11,12]

यौन अभिविन्यास और मौत की सजा आज मानव अधिकारों में सबसे विभाजनकारी मुद्दे हैं। यौन अभिविन्यास मुद्दा समलैंगिक, उभयलिंगी और लिंग परिवर्तन वाले व्यक्तियों के अधिकारों को संदर्भित करता है और दृढ़ता से कई यूरोपीय देशों और नागरिक समाज द्वारा स्वीकृत है। मौत की सजा के उन्मूलन के लिए भी कई पश्चिमी देशों और गैर सरकारी संगठनों द्वारा सख्ती अपनाई जा रही है, और कई देशों द्वारा, जो इसे बनाए रखने पर अड़े हुए हैं, इसका विरोध किया जा रहा है।

भारत की स्थिति

भारत मानव अधिकार को कायम रखना चाहता है और इस कार्य को राज्य के अधिकार क्षेत्र में मानता है। राष्ट्रीय क्षमता को मजबूत करने के लिए सहायता प्रदान करके अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को इसके एक प्रचारक की भूमिका निभानी है। अंतर्राष्ट्रीय संगठन राज्यों के बीच अनुभव और सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान-प्रदान और सुझावों को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं। भारत दखल तंत्र, विशेष रूप से देश-विशिष्ट आयोगों की जांच का विरोध करता है, जिन्हें संबंधित देश का समर्थन प्राप्त नहीं है। इसके दृष्टिकोण को मोटे तौर पर, राष्ट्रीय संप्रभुता का सम्मान करने के पक्ष में झुका हुआ कहा जा सकता है, हालांकि विशिष्ट अनुचित उल्लंघन में इसने अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई का समर्थन किया है। भारत किसी अलग शिकायत या जांच प्रक्रिया को स्वीकार नहीं किया है।

भारत दो यूपीआर चक्र के माध्यम से गुजरा है और उन संधि निकायों द्वारा इसकी समीक्षा की गई, जिनमें यह एक सदस्य है। इसने विशेष प्रक्रियाओं के लिए स्थाई आमंत्रणों को भी विस्तारित किया है, जबकि दौरे के लिए कुछ अनुरोध अभी तक बकाया हैं। भारत के मानव अधिकारों की स्थिति के संबंध में देशों द्वारा व्यक्त की जाने वाली मुख्य चिंताओं में यातना, सशस्त्र बल विशेष शक्तियाँ अधिनियम के खिलाफ कन्वेंशन का अनुसमर्थन, और मौत की सजा शामिल हैं। लिंग की ओर रुख के अपराधीकरण के पुराने

कानून की वैधता के बाद भी अदालतों के फैसले को बरकरार रखना एक मुद्दा बन गया है।

भारत के मानव अधिकारों की छवि, आम तौर पर अच्छी है, हालांकि कुछ गैर-सरकारी संगठनों ने कश्मीर में मानवाधिकारों के उल्लंघन को एक मुद्दा बनाया है और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के खिलाफ भेदभाव करने का आरोप लगाया है। पश्चिमी देश मिशनरियों द्वारा धर्मांतरण पर किसी भी प्रतिबंध के धर्म की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध मानते हैं, जो उनके विचारकों द्वारा बनाए गए धर्म की स्वतंत्रता सूचकांक में भारत की रेटिंग को कम करता है। देश के भीतर प्रगतिविरोधी धार्मिक और सामाजिक संगठनों के बयान और कार्रवाई भी भारत की अन्यथा उत्कृष्ट रिकॉर्ड को प्रभावित करते हैं।

मानव अधिकारों पर अपनी अंतरराष्ट्रीय छवि को नजरअंदाज करना भारत के लिए मूर्खता होगी। इसकी अंतरराष्ट्रीय सोच इसके सैद्धांतिक घरेलू और विदेश नीतियों से आते हैं। इसके लोकतंत्र और बहुलवाद ने एक प्रतिष्ठा बनाई है, जिसने सम्मान और प्रशंसा प्राप्त की है। दोनों मानव अधिकार के प्रति इसके सम्मान पर बने हैं। भारत को दखल देने वाले अंतरराष्ट्रीय तंत्र को स्वीकार करने की जरूरत नहीं है, वहीं यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह अपने राष्ट्रीय तंत्र और कानून में दुनिया में उच्चतम मानकों को हासिल करने के लिए उपाय करने चाहिए। अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन करने में इसे अन्य देशों में बीच में रहने की बजाय, इस क्षेत्र में अग्रणी होना चाहिए। दुनिया को यातना के खिलाफ सम्मेलन में इसकी पुष्टि की आवश्यकता होगी, जैसा करने का, इसने अपने पहले यूपीआर में वादा किया था। इसका मतलब एएफएसपीए की गंभीर रूप से जांच और मौत की सजा के लिए दृढ़ दिशा-निर्देशों की स्थापना के करना है। इसे बाहरी फरमानों के बजाय राष्ट्रीय पहल के रूप में इनका व्यवहार करना चाहिए।

आधुनिक भारत को एक प्रवृत्ति निर्धारक होना चाहिए। इसने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को तब अपनाया जब कई राजनीतिक विचारकों ने यह कहा था कि उच्च निरक्षरता वाले एक गरीब देश को इसकी बजाय विकास पर ध्यान देना चाहिए। भारत ने विकास को, मानव विकास में शामिल करने और अपनी सांस्कृतिक विरासत के मूल मानव अधिकारों सहित आधुनिक विचारों से मिलाने के रूप में नए सिरे से परिभाषित किया है। धार्मिक कट्टरवाद और अन्य प्रगतिविरोध बलों के हमले के अंतर्गत यह प्रवृत्ति कमजोर हो रही है। देश के भीतर और बाहर दोनों ओर से इसका मुकाबला करने की जरूरत है। भारत ऐसा तभी कर सकता है जब यह मानव अधिकारों पर उच्च नैतिक जमीन को वापस जीत सके।

मानव अधिकारों की प्रगति में अड़चनों और अंतरराष्ट्रीय यंत्र में खामियों के बावजूद, पिछली आधी सदी में दुनिया के मानव अधिकारों को बढ़ावा देने में हुई जबरदस्त प्रगति को पहचाना जा सकता है। वैश्विक टीवी और जागरूकता के इस युग में सरकारें दुनिया में जनता की राय को नजर अंदाज नहीं कर सकती। देशों द्वारा एचआरसी में अपनी छवि को महत्व देने से यह स्पष्ट है। देशों को सुनिश्चित करना चाहिए कि एचआरसी में उनके प्रतिनिधियों में महिलाएं और अल्पसंख्यक समुदायों के सदस्य शामिल हैं।

बहस और राजनीति के अलावा, हर देश इस बात पर अधिक से अधिक ध्यान है कि दूसरे देशों द्वारा उनके बारे में क्या कहा जा रहा है। वे सभी नकारात्मक धारणाओं के प्रति संवेदनशील हैं। जब तक वे रहते हैं तब तक आशा की किरण है और मानव अधिकारों में आगे आंदोलन होगा। भारत को इस प्रक्रिया में नेतृत्व लेना जारी रखना चाहिए।

विचार-विमर्श

क्या "मानवाधिकार" का उपयोग एक अमूर्त और दार्शनिक अर्थ में किया जा सकता है, या तो नैतिक दावे की एक विशेष श्रेणी को दर्शाने के रूप में, जिसे सभी मनुष्य लागू कर सकते हैं या, अधिक व्यावहारिक रूप से, सकारात्मक कानून में इन दावों की अभिव्यक्ति के रूप में, उदाहरण के लिए, संवैधानिक के रूप में राष्ट्रीय कानूनी प्रक्रियाओं के तहत सरकारों को जवाबदेह बनाए रखने की गारंटी देता है। जबकि वाक्यांश की पहली समझ को "मानवाधिकार" के रूप में संदर्भित किया जा सकता है, दूसरे को यहां "मानवाधिकार कानून" के रूप में वर्णित किया गया है।

जबकि "मानवाधिकार" की उत्पत्ति स्वयं मनुष्य की प्रकृति में निहित है, जैसा कि दुनिया के सभी प्रमुख धर्मों और नैतिक दर्शन में व्यक्त किया गया है, "मानवाधिकार कानून" एक हालिया घटना है जो उदारवाद के उदय के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। लोकतांत्रिक राज्य ऐसे राज्यों में, बहुसंख्यकवाद कानून और कार्यपालिका की बढ़ती नौकरशाही कार्यप्रणाली को वैध बनाता है। हालांकि, बहुसंख्यकों को कभी-कभी "संख्यात्मक" अल्पसंख्यकों, जैसे सजायाप्राप्त अपराधी, भाषाई या धार्मिक समूह, गैर-राष्ट्रीय, स्वदेशी लोग और सामाजिक रूप से कलंकित लोगों के प्रति बहुत कम सम्मान हो सकता है। इसलिए संख्यात्मक अल्पसंख्यकों, कमजोरों और शक्तिहीनों के अस्तित्व और अधिकारों की गारंटी देना आवश्यक हो जाता है। यह सभी के लिए बुनियादी मानवाधिकारों वाले अधिकारों के संवैधानिक रूप से स्थापित और न्यायसंगत बिल के रूप में समाज को नियंत्रित करने वाले नियमों पर सहमति के द्वारा किया जाता है। अधिकारों के

इस विधेयक के माध्यम से, "मानवाधिकार कानून" बनाया गया है, जो कानूनी प्रणाली का अभिन्न अंग बन गया है और सामान्य कानून और कार्यकारी कार्यवाई से बेहतर है।

इस लेख में वैश्विक, क्षेत्रीय और उपक्षेत्रीय स्तर पर मानवाधिकार कानून के इतिहास के कुछ पहलुओं का पता लगाया गया है। अधिक सुदूर अतीत की बजाय, हाल पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। आरंभ करने के लिए, मानवाधिकार कानून की "तीन पीढ़ियों" के बारे में कुछ टिप्पणियाँ की गई हैं।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून की तीन पीढ़ियाँ

मानवाधिकार सक्रियता को यह सुनिश्चित करने के लिए एक संघर्ष के रूप में वर्णित किया जा सकता है कि मानव अधिकारों की पूर्ण कानूनी मान्यता और वास्तविक प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए मानव अधिकारों और मानव अधिकार कानून के बीच अंतर को कम किया जाए। इतिहास से पता चलता है कि सरकारें आम तौर पर स्वेच्छा से अधिकार नहीं देती हैं, बल्कि अधिकारों का लाभ केवल निरंकुश सत्ता को सफल चुनौती के माध्यम से ही सुरक्षित किया जाता है। मैग्ना कार्टा का अनुसरण करते हुए, जिसने तेरहवीं शताब्दी के इंग्लैंड में शाही सरकार की शक्तियों पर सीमाएं निर्धारित कीं, 1776 की अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा और 1789 की फ्रांसीसी घोषणा डेस ड्रॉइट्स डे ल'होमे एट डे डु सिटोयेन (मनुष्य और नागरिक के अधिकारों की घोषणा)) इस बात के मील के पथर थे कि कैसे क्रांतिकारी दृष्टिकोण को राष्ट्रीय कानून में बदला जा सकता है और भविष्य में दुरुपयोग के खिलाफ न्यायसंगत गारंटी दी जा सकती है।

मानवाधिकारों की तीन पीढ़ियों का पारंपरिक वर्गीकरण, जिसका उपयोग राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार प्रवचन दोनों में किया जाता है, फ्रांसीसी क्रांति के रोने की प्रतिध्वनि के रूप में मानवाधिकारों के कालानुक्रमिक विकास का पता लगाता है: लिबर्ट (स्वतंत्रता, "नागरिक और राजनीतिक" या "प्रथम") पीढ़ी" अधिकार), एगालिटे (समानता, "सामाजिक-आर्थिक" या "दूसरी पीढ़ी" अधिकार), और फ्रेटरनिटे (एकजुटता, "सामूहिक" या "तीसरी पीढ़ी" अधिकार)। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में, अधिकारों के लिए संघर्ष सत्तावादी उत्पीड़न से मुक्ति और स्वतंत्र भाषण, संघ और धर्म के अधिकारों और वोट देने के अधिकार पर केंद्रित था। औद्योगिकीकरण की दुनिया में राज्य की भूमिका के बदले हुए दृष्टिकोण के साथ, और बढ़ती असमानताओं की पृष्ठभूमि के खिलाफ, सामाजिक-आर्थिक अधिकारों का महत्व अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त हो गया है। बढ़ते वैश्वीकरण और अतिव्यापी वैश्विक चिंताओं के प्रति बढ़ती जागरूकता के साथ, विशेष रूप से दुनिया के कुछ हिस्सों में अत्यधिक गरीबी के कारण, "तीसरी पीढ़ी" के अधिकारों, जैसे स्वस्थ पर्यावरण, आत्मनिर्णय और विकास के अधिकार को अपनाया गया है।

शीत युद्ध की अवधि के दौरान, पश्चिमी लोकतंत्रों में "पहली पीढ़ी" के अधिकारों को प्राथमिकता दी गई, जबकि दूसरी पीढ़ी के अधिकारों का समाजवादी धारणाओं के रूप में विरोध किया गया। विकासशील दुनिया में, आर्थिक वृद्धि और विकास को अक्सर "नागरिक और राजनीतिक" अधिकारों को मात देने में सक्षम लक्ष्य माना जाता था। अधिकारों के दो सेटों के बीच विसंगति पर भी जोर दिया गया: "नागरिक और राजनीतिक" अधिकारों को तत्काल लागू करने के लिए कहा गया था, जबकि "दूसरी पीढ़ी" के अधिकारों को केवल दीर्घकालिक या उत्तरोत्तर लागू करने के लिए समझा गया था। विभाजन की एक अन्य धुरी यह धारणा थी कि "पहली पीढ़ी" के अधिकार राज्यों पर नकारात्मक दायित्व डालते हैं जबकि "दूसरी पीढ़ी" के अधिकार राज्यों पर सकारात्मक दायित्व डालते हैं। बर्लिन की दीवार के गिरने के बाद, यह आम तौर पर स्वीकार कर लिया गया कि इस तरह का द्वंद्व उस हद तक न्याय नहीं करता है जिस हद तक ये अधिकार परस्पर संबंधित और अन्योन्याश्रित हैं। सकारात्मक/नकारात्मक दायित्वों का द्वंद्व अब टिकता नहीं है। सभी अधिकारों को अन्योन्याश्रित और अविभाज्य मानना और संभावित रूप से राज्य पर विभिन्न प्रकार के दायित्वों को शामिल करना अधिक उपयोगी लगता है। इन दायित्वों को सम्मान, सुरक्षा, प्रचार और पूर्ति के कर्तव्य के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

वैश्विक स्तर

पर कई शताब्दियों तक कोई अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून व्यवस्था मौजूद नहीं थी। वास्तव में, अंतरराष्ट्रीय कानून ने अटलांटिक दास व्यापार और उपनिवेशवाद सहित कई सबसे खराब मानवाधिकार अत्याचारों का समर्थन किया और मिलीभगत की। केवल उन्नीसवीं सदी में ही अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने गुलामी को समाप्त करने वाली एक संधि को अपनाया। पहले अंतर्राष्ट्रीय कानूनी मानकों को अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के तत्वावधान में अपनाया गया था, जिसकी स्थापना 1919 में वर्साय की शांति संधि के हिस्से के रूप में की गई थी। ILO का उद्देश्य निरंतर औद्योगिकीकरण की दुनिया में श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करना है।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद, राष्ट्र संघ के तहत एक मानवाधिकार प्रणाली स्थापित करने के अस्थायी प्रयास किए गए। उदाहरण के लिए, अल्पसंख्यकों की शिकायतें सुनने के लिए एक अल्पसंख्यक समिति की स्थापना की गई थी, और अधिदेश क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों की व्यक्तिगत याचिकाओं से निपटने के लिए एक अधिदेश आयोग की स्थापना की गई थी। हालाँकि, ये प्रयास बहुत सफल नहीं रहे और द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ने पर अचानक समाप्त हो गए। उस युद्ध के आघात और विशेष रूप से राष्ट्रीय समाजवाद के नाम पर हिटलर के

नस्लीय रूप से प्रेरित अत्याचारों के कारण युद्ध के खिलाफ और शांति के संरक्षण के लिए संयुक्त राष्ट्र के रूप में अंतर्राष्ट्रीय सहमति को मजबूत करना पड़ा।

संयुक्त राष्ट्र के तहत मानवाधिकारों के प्रचार और संरक्षण की मुख्य प्रणाली के दोहरे आधार हैं: संयुक्त राष्ट्र चार्टर, 1945 में अपनाया गया, और बाद में संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों द्वारा अपनाई गई संधियों का एक नेटवर्क। चार्टर-आधारित प्रणाली सभी 192 संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों पर लागू होती है, जबकि केवल वे राज्य जिन्होंने विशेष संधियों की पुष्टि की है या उनमें शामिल हुए हैं, वे संधि-आधारित (या पारंपरिक) प्रणाली के उस हिस्से का पालन करने के लिए बाध्य हैं, जिस पर वे स्पष्ट रूप से सहमत हैं।

चार्टर-आधारित प्रणाली

यह प्रणाली संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद के तहत विकसित हुई, जिसने संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 68 के अनुसार मानवाधिकार पर आयोग की स्थापना की। आयोग में स्वतंत्र विशेषज्ञ शामिल नहीं थे, बल्कि संबंधित राज्यों के मानवाधिकार रिकॉर्ड के बावजूद, परिषद द्वारा चुने गए 54 सरकारी प्रतिनिधि शामिल थे। परिणामस्वरूप, सबसे खराब मानवाधिकार उल्लंघनकर्ताओं में से कुछ राज्यों को आयोग के सदस्यों के रूप में सेवा प्रदान की गई। आयोग की मुख्य उपलब्धि तीन प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार उपकरणों का विस्तार और लगभग सार्वभौमिक स्वीकृति थी: 1948 में अपनाया गया मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा, नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध (आईसीसीपीआर) और अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध। आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकार (ICESCR), बाद के दो को 1966 में अपनाया गया। जैसा कि उन दो अलग-अलग दस्तावेजों को अपनाने से संकेत मिलता है, सार्वभौमिक घोषणा को एक एकल बाध्यकारी साधन में बदलने का प्रारंभिक विचार पूरा नहीं हुआ था, मुख्य रूप से कमी के कारण सामाजिक-आर्थिक अधिकारों की न्यायसंगतता पर सहमति। परिणामस्वरूप, ICCPR के कुछ राज्यों द्वारा उल्लंघन का आरोप लगाते हुए व्यक्तिगत शिकायतें दर्ज की जा सकती हैं, लेकिन ICESCR के साथ ऐसा नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र चार्टर प्रणाली का मानक आधार 10 दिसंबर 1948 को अपनाया गया मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा है, जिसने संयुक्त राष्ट्र चार्टर में मानव अधिकारों के अस्पष्ट को आधिकारिक सामग्री दी है। हालाँकि इसे बिना किसी बाध्यकारी शक्ति के केवल एक घोषणा के रूप में अपनाया गया था, बाद में इसे राज्य आचरण के एक सार्वभौमिक मानदंड के रूप में मान्यता दी गई है। इसके कई प्रावधानों ने प्रागत अंतरराष्ट्रीय कानून का दर्जा हासिल कर लिया है।[13,14]

मानवाधिकारों के उल्लंघन के आरोपों का सामना करते हुए, विशेष रूप से रंगभेदी दक्षिण अफ्रीका में, आयोग को शिकायतों पर विचार करने के लिए एक प्रणाली तैयार करनी पड़ी। दो तंत्र उभरे, "1235" और "1503" प्रक्रियाएँ, जिन्हें क्रमशः 1959 और 1970 में अपनाया गया, प्रत्येक का नाम उन्हें स्थापित करने वाले आर्थिक और सामाजिक परिषद के प्रस्ताव के नाम पर रखा गया। दोनों तंत्र केवल घोर मानवाधिकार उल्लंघन की स्थितियों से निपटते हैं। अंतर यह था कि "1235" प्रक्रिया में सार्वजनिक चर्चा हुई जबकि "1503" गोपनीय रही। मानवाधिकारों के प्रभावी कार्यान्वयन में अंतर को भरने के लिए आयोग द्वारा कई विशेष प्रक्रियाएँ स्थापित की गईं। अनोखी प्रक्रियाएँ विशेष प्रतिवेदकों, स्वतंत्र विशेषज्ञों या कार्य समूहों का रूप लेती हैं जो किसी विशेष देश (देश-विशिष्ट जनादेश) को देखते हैं या किसी विषयगत मुद्दे (विषयगत जनादेश) पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

2005 तक कुछ दशकों की छलांग लगाते हुए, अपनी रिपोर्ट इन लार्जर फ्रीडम: टुवर्डस डेवलपमेंट, सिक्योरिटी एंड ह्यूमन राइट्स फॉर ऑल में, पूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने आयोग के स्थान पर एक छोटे, स्थायी और मानवाधिकार आयोग का आह्वान किया था- आज्ञाकारी परिषद, उन राज्यों द्वारा छोड़ी गई विश्वसनीयता की कमी को भरने में सक्षम है जिन्होंने अपने आयोग की सदस्यता का उपयोग "खुद को आलोचना से बचाने और दूसरों की आलोचना करने के लिए" किया।¹ आयोग को बदलने का प्रमुख कारण यह था कि इसने अपने देश-विशिष्ट जनादेश का बहुत ही चयनात्मक तरीके से प्रयोग किया, जिसका मुख्य कारण प्रतिनिधियों का राजनीतिक पूर्वाग्रह और अधिक शक्तिशाली देशों की खुद से और उनके समर्थन का आनंद ले रहे देशों से ध्यान हटाने की क्षमता थी। . 2006 में, महासभा ने मानवाधिकार आयोग के प्रतिस्थापन के रूप में मानवाधिकार परिषद बनाने के लिए महासचिव की सिफारिश का पालन करने का निर्णय लिया।²

पूर्व मानवाधिकार आयोग और वर्तमान मानवाधिकार परिषद के बीच कुछ महत्वपूर्ण अंतर हैं। महासभा के सहायक अंग के रूप में, परिषद को आयोग की तुलना में ऊँचा दर्जा प्राप्त है, जो आर्थिक और सामाजिक परिषद का एक कार्यात्मक निकाय था। इसकी सदस्यता थोड़ी कम है (47 राज्य) और इसके सदस्य विधानसभा (97 राज्य) के पूर्ण बहुमत से चुने जाते हैं। कुछ राज्यों के लंबे समय तक प्रभुत्व से बचने के लिए, सदस्यों को केवल दो लगातार तीन-वर्षीय कार्यकाल के लिए चुना जा सकता है। परिषद एक स्थायी या स्थायी निकाय के रूप में कार्य करती है, जो नियमित रूप से मिलती है, न कि केवल वार्षिक "राजनीतिक रूप से चार्ज किए गए छह-सप्ताह के सत्र" के लिए जैसा कि आयोग ने किया था। अधिक मानवाधिकार-संवेदनशील चयन मानदंडों के बाद, विधानसभा द्वारा चुने

गए राज्यों की सूची उन देशों के साथ भिन्न होती है, जिन्होंने 2006 में आयोग में कार्य किया था। विधानसभा, दो-तिहाई बहुमत से, किसी ऐसे सदस्य को निर्लंबित कर सकती है जो घोर और व्यवस्थित मानवाधिकार उल्लंघन में लिप्त है।

मानवाधिकार परिषद ने गोपनीय "1503" (जिसे अब "अनुपालक प्रक्रिया" कहा जाता है) सहित अधिकांश विशेष प्रक्रियाओं को बरकरार रखा, और यूनिवर्सल पीयर रिव्यू (यूपीआर) की शुरुआत की। अप्रैल 2008 से शुरू होकर, संयुक्त राष्ट्र के एक तिहाई सदस्य देश इस प्रक्रिया से गुजर चुके हैं। यूपीआर एसयूपीआर अफ्रीकी सहकर्मी समीक्षा तंत्र के साथ समानताएं दिखाता है जिसे अफ्रीका के विकास के लिए नई साझेदारी (एनईपीएडी) के तहत स्थापित किया गया है। मानवाधिकारों पर सार्वभौम घोषणा के अलावा, महासभा ने कई अन्य घोषणाओं को अपनाया। जब राज्यों के बीच पर्याप्त सहमति बनती है, तो घोषणाएं बाध्यकारी समझौतों में तब्दील हो सकती हैं। इससे पता चलता है कि गैर-आधिपत्य नागरिकता की सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर आवश्यक स्तर की सहमति का अभाव है। दो प्रासंगिक घोषणाएँ - जातीय, धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों से संबंधित व्यक्तियों के अधिकारों पर घोषणा, 1992 में अपनाई गई, और स्वदेशी लोगों के अधिकारों पर घोषणा, 2007 में अपनाई गई, को बाध्यकारी उपकरणों में अनुवादित नहीं किया गया है। विकास के अधिकार पर घोषणा के बारे में भी यही सच है, जिसे 1986 में अपनाया गया था।

संधि-आधारित प्रणाली

संधि-आधारित प्रणाली चार्टर-आधारित प्रणाली से भी अधिक तेजी से विकसित हुई। 1948 में अपनाई गई पहली संधि, नरसंहार के अपराध की रोकथाम और सजा पर कन्वेंशन थी, जिसने नाजी नरसंहार के सबसे तात्कालिक पिछले अनुभव को संबोधित किया था। तब से, संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में, बड़ी संख्या में संधियों को अपनाया गया है, जिसमें कई विषयों को शामिल किया गया है, उनमें से आठ मानव अधिकारों पर हैं - जिनमें से प्रत्येक में एक संधि निगरानी निकाय शामिल है।

पहला, 1965 में अपनाया गया, नस्लीय भेदभाव के सभी रूपों के उन्मूलन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (सीईआरडी) है, इसके बाद 1966 में आईसीसीपीआर और आईसीईएससीआर द्वारा अपनाया गया। इसके बाद अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार शासन ने अपना ध्यान सामान्य फोकस से हटाना शुरू कर दिया। विशेष रूप से हाशिये पर पड़े और उत्पीड़ित समूहों या विषयों के बजाय: महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर कन्वेंशन (CEDAW) 1979 में अपनाया गया; अत्याचार और अन्य क्रूर, अमानवीय या अपमानजनक व्यवहार या सज़ा के विरुद्ध कन्वेंशन (1984); बाल अधिकारों पर कन्वेंशन (1989); सभी प्रवासी श्रमिकों और उनके परिवारों के सदस्यों के अधिकारों की सुरक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (1990); और विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन (2006)। नवीनतम संधि जबर्न गायब होने से सभी व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन (आईसीडीडी) है, जिसे 2006 में भी अपनाया गया था लेकिन अभी तक लागू नहीं हुआ है। 2008 में आईसीईएससीआर के लिए एक वैकल्पिक प्रोटोकॉल को अपनाने के साथ, सामाजिक-आर्थिक अधिकारों के कथित उल्लंघन के संबंध में व्यक्तिगत शिकायतों की अनुमति देते हुए, संयुक्त राष्ट्र संधि प्रणाली अब इस सिद्धांत का भी प्रतीक है कि सभी अधिकार न्यायसंगत हैं। संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त का कार्यालय सार्वभौमिक घोषणा को अपनाने के बीस साल बाद, मानवाधिकार पर पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 1968 में तेहरान में आयोजित किया गया था। चूंकि दुनिया उस समय शीत युद्ध की चपेट में थी, इसलिए बहुत कम सहमति बनी और बहुत कुछ हासिल नहीं हुआ। 1993 में जब वियना में दूसरा विश्व सम्मेलन हुआ तो दृश्य बहुत अलग था। शीत युद्ध समाप्त हो चुका था, लेकिन बोस्निया और हर्जगोविना में नरसंहार सामने आ रहा था। इस पृष्ठभूमि में, 171 राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों ने मुलाकात की और वियना घोषणा और कार्रवाई कार्यक्रम को अपनाया। इसने पुनः पुष्टि की कि सभी अधिकार सार्वभौमिक, अविभाज्य और अन्योन्याश्रित हैं। वहां अपनाए गए कई प्रस्तावों को बाद में लागू किया गया, जिसमें CEDAW के लिए एक वैकल्पिक प्रोटोकॉल को अपनाना और 1994 में चुने गए पहले उच्चायुक्त (जोस अयाला लास्सो) के साथ मानवाधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त के कार्यालय की स्थापना शामिल थी। संयुक्त राष्ट्र में मानवाधिकारों की प्रमुख जिम्मेदारी है। संकटग्रस्त देशों में मानवाधिकार क्षेत्र की बढ़ती महत्वपूर्ण उपस्थिति भी इस कार्यालय के अंतर्गत आती है।

अन्य सम्मेलनों ने भी नस्लवाद और ज़ेनोफोबिया जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डाला है, जिन पर 2001 में दक्षिण अफ्रीका के डरबन में आयोजित नस्लवाद के खिलाफ विश्व सम्मेलन में चर्चा की गई थी। इसकी परिणति डरबन घोषणा और कार्रवाई कार्यक्रम को अपनाने के रूप में हुई। घोषणा के कार्यान्वयन में प्रगति का आकलन करने के लिए अप्रैल 2009 में एक समीक्षा सम्मेलन हुआ।

क्षेत्रीय स्तर

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से, तीन क्षेत्रीय मानवाधिकार व्यवस्थाएँ - मानदंड और संस्थाएँ जिन्हें राज्यों द्वारा बाध्यकारी के रूप में स्वीकार किया गया है - स्थापित की गई हैं। इनमें से प्रत्येक प्रणाली एक अंतरसरकारी संगठन या एक अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक निकाय के तत्वावधान में संचालित होती है। यूरोपीय प्रणाली के मामले में - तीनों में से सर्वश्रेष्ठ - यह यूरोप की परिषद है, जिसकी स्थापना 1949 में 10 पश्चिमी यूरोपीय राज्यों द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में मानवाधिकारों और कानून के शासन को बढ़ावा देने के लिए की गई

थी। अधिनायकवाद की ओर लौटने से बचा और साम्यवाद के विरुद्ध एक कवच के रूप में कार्य किया। क्षेत्रीय शांति, सुरक्षा और विकास को बढ़ावा देने के लिए 1948 में ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ़ अमेरिकन स्टेट्स (OAS) की स्थापना की गई थी। अफ्रीका में, अफ्रीकी एकता संगठन (ओएयू) के तत्वावधान में एक मानवाधिकार प्रणाली अपनाई गई, जिसका गठन 1963 में हुआ और 2002 में अफ्रीकी संघ (एयू) में तब्दील हो गया।

तीनों प्रणालियों में से प्रत्येक में, मूल मानदंड एक प्रमुख संधि में निर्धारित किए गए हैं। यूरोप की परिषद ने 1950 में अपनी प्राथमिक मानवाधिकार संधि को अपनाया: मानवाधिकार और मौलिक स्वतंत्रता का यूरोपीय सम्मेलन। इसमें अपनाए गए प्रोटोकॉल को शामिल करते हुए, इसमें मुख्य रूप से "नागरिक और राजनीतिक" अधिकार शामिल हैं, लेकिन यह संपत्ति के अधिकार का भी प्रावधान करता है। यूरोप परिषद के सभी 47 सदस्य यूरोपीय कन्वेंशन के पक्षकार बन गए हैं। OAS ने 1969 में मानवाधिकार पर अमेरिकी कन्वेंशन को अपनाया, जिसे 24 राज्यों द्वारा अनुमोदित किया गया है। अमेरिकी कन्वेंशन में यूरोपीय कन्वेंशन के समान अधिकार शामिल हैं, लेकिन यह न्यूनतम "सामाजिक-आर्थिक" अधिकारों का प्रावधान करके आगे बढ़ता है। इन दो संधियों के विपरीत, 1981 में OAU द्वारा अपनाए गए अफ्रीकी चार्टर में न्यायसंगत "सामाजिक-आर्थिक" अधिकार शामिल हैं और व्यक्तियों के कर्तव्यों और लोगों के अधिकारों पर विस्तार से बताया गया है। एयू के सभी सदस्य अफ्रीकी चार्टर के पक्षकार हैं।

मुख्य संधि को लागू करने या लागू करने का तरीका प्रत्येक क्षेत्र में भिन्न होता है। कई दशकों के विकास में, कार्यान्वयन की यूरोपीय प्रणाली, स्ट्रासबर्ग, फ्रांस से संचालित, एक ऐसी प्रणाली से विकसित हुई जहां एक एकल न्यायिक संस्थान बनाने के लिए एक आयोग और एक न्यायालय सह-अस्तित्व में थे। यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय व्यक्तिगत मामलों से निपटता है। अमेरिका में एक दोहरा मॉडल लागू है, जिसमें वाशिंगटन, डीसी में स्थित अंतर-अमेरिकी आयोग और सैन जोस, कोस्टा रिका में स्थित अंतर-अमेरिकी मानवाधिकार न्यायालय शामिल हैं। व्यक्तिगत शिकायतकर्ताओं को अपनी शिकायतें पहले अंतर-अमेरिकी आयोग को प्रस्तुत करनी होंगी; इसके बाद, मामला अंतर-अमेरिकी मानवाधिकार न्यायालय में आगे बढ़ सकता है। आयोग के पास साइट पर दौरे आयोजित करने का भी कार्य है। हाल के कुछ संस्थागत सुधारों के बाद, अफ्रीकी प्रणाली अब अंतर-अमेरिकी प्रणाली के समान हो गई है।

अरब राज्यों की लीग और इस्लामिक सम्मेलन संगठन (ओआईसी) के तहत नवोदित अरब और मुस्लिम क्षेत्रीय प्रणालियाँ भी उभरी हैं। इस्लामी विश्व दृष्टिकोण के अनुसार, कुरान और अन्य धार्मिक स्रोत सामाजिक जीवन के नियमन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

अरब राज्यों की लीग की स्थापना 1945 के अरब राज्यों की लीग के समझौते के अनुसार की गई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य अपने सदस्यों के बीच घनिष्ठ संबंध विकसित करके अरब राज्यों के बीच एकता को मजबूत करना है। यह समझौता अपने सदस्यों की स्वतंत्रता और संप्रभुता पर जोर देता है, लेकिन इसके संस्थापक दस्तावेज़ में मानव अधिकारों की सामग्री या सिद्धांतों का कोई उल्लेख नहीं किया गया है।^[15]

1968 में तेहरान विश्व सम्मेलन में, कुछ अरब राज्य इज़राइल के कब्जे वाले क्षेत्रों में अरबों की स्थिति को एजेंडे में शामिल करने में कामयाब रहे और इसे मानवाधिकार मुद्दे के रूप में सफलतापूर्वक व्यक्त किया। इसने 1967 में इज़राइल के हाथों कई पराजयों के बाद अरब राज्यों के बीच मानवाधिकारों के बारे में जागरूकता पैदा की। हालाँकि, तेहरान सम्मेलन और उसके बाद, मानवाधिकारों के प्रति अरब लीग की प्रतिबद्धता मुख्य रूप से आलोचना को निर्देशित करने पर थी। फ़िलिस्तीन और अन्य कब्जे वाले क्षेत्रों में निवासियों के साथ अपने व्यवहार पर इज़राइल। 1968 में, बेरूत में मानवाधिकारों पर एक क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था, जहाँ मानवाधिकारों पर स्थायी अरब आयोग (एसीएचआर) की स्थापना की गई थी। स्थापना के बाद से, एसीएचआर एक अत्यधिक राजनीतिकरण वाली संस्था रही है, जिसकी राजनीतिक प्रकृति नियुक्ति की पद्धति से बढ़ी है। आयोग में कई अन्य अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार निकायों की तरह स्वतंत्र विशेषज्ञ शामिल नहीं हैं, बल्कि सरकारी प्रतिनिधि शामिल हैं। 15 सितंबर 1994 को, अरब राज्यों की लीग की परिषद ने मानवाधिकारों पर अरब चार्टर को अपनाया, जिसके लागू होने के लिए, जिसके लिए सात अनुसमर्थन की आवश्यकता थी, 2008 में पहुंचा।

1969 में स्थापित ओआईसी का लक्ष्य 56 सदस्य देशों के बीच इस्लामी एकजुटता को बढ़ावा देना और आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सहयोग की दिशा में काम करना है। इस ढांचे के तहत 1990 में काहिरा में अपनाया गया प्रमुख मानवाधिकार दस्तावेज़, इस्लाम में मानवाधिकारों पर काहिरा घोषणा है, जो केवल घोषणात्मक प्रकृति का है। जैसा कि इसके शीर्षक से संकेत मिलता है, और ओआईसी के उद्देश्यों को देखते हुए, घोषणा शरिया के सिद्धांतों पर आधारित है। 2004 में, OIC ने एक विशिष्ट फोकस के साथ एक बाध्यकारी उपकरण अपनाया: इस्लाम में बाल अधिकारों पर वाचा। यह कन्वेंशन अनुसमर्थन के लिए खुला है और 20 ओआईसी सदस्य देशों द्वारा इसे अनुमोदित करने के बाद लागू होगा। यद्यपि कन्वेंशन एक निगरानी तंत्र - बाल अधिकारों पर इस्लामी समिति - का प्रावधान करता है, इसका जनादेश केवल अस्पष्ट रूप से तैयार किया गया है।

मुस्लिम दुनिया के साथ कुछ हद तक ओवरलैप करते हुए, विषम एशियाई क्षेत्र इंडोनेशिया से जापान तक फैला हुआ है, जिसमें राष्ट्रों का एक विविध समूह शामिल है। संयुक्त राष्ट्र के कुछ प्रयासों के बावजूद, एशिया-प्रशांत क्षेत्र में कोई भी सुपरनैशनल मानवाधिकार सम्मेलन या निकाय स्थापित नहीं किया गया है। इस क्षेत्र के सभी विविध राज्यों को एकजुट करने वाले क्षेत्रीय छत्र के रूप में कार्य करने वाले एक अंतर-सरकारी संगठन की अनुपस्थिति में, एक क्षेत्रीय मानवाधिकार प्रणाली की संभावना नहीं है।

उपक्षेत्रीय स्तर

हाल के दिनों में, उपक्षेत्रीय स्तर मानवाधिकार संघर्ष के लिए एक अन्य स्थल के रूप में उभरा है, विशेष रूप से अफ्रीका में। अफ्रीकी संघ के तहत एक कमजोर क्षेत्रीय प्रणाली के परिणामस्वरूप, 1970 के दशक से कई अफ्रीकी उप-क्षेत्रीय आर्थिक समुदाय (आरईसी) उभरे: सबसे प्रमुख रूप से, पश्चिम अफ्रीकी राज्यों का आर्थिक समुदाय, पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका के लिए साझा बाजार, दक्षिणी अफ्रीकी विकास समुदाय (SADC) और पूर्वी अफ्रीकी समुदाय (EAC)। हालाँकि ये आरईसी मुख्य रूप से उपक्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण के उद्देश्य से हैं, न कि मानवाधिकारों की प्राप्ति के लिए, इसमें एक अपरिहार्य ओवरलैप है कि आर्थिक एकीकरण और गरीबी उन्मूलन के उनके उद्देश्य सामाजिक-आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति से जुड़े हुए हैं। आरईसी की कई संस्थापक संधियों में, मानवाधिकारों को संगठनों के उद्देश्यों के अभिन्न अंग के रूप में स्पष्ट मान्यता दी गई है। मानवाधिकार मामलों से निपटने के लिए एक अंतर्निहित या कभी-कभी स्पष्ट जनादेश के साथ उपक्षेत्रीय अदालतें बनाकर, यह स्पष्ट है कि ये आर्थिक समुदाय अफ्रीकी क्षेत्रीय मानवाधिकार प्रणाली में प्रमुख भूमिका निभाने वाले खिलाड़ी बन गए हैं।

उपक्षेत्रीय अदालतों के दो फैसले मानवाधिकार संरक्षण के लिए आरईसी के बढ़ते महत्व को दर्शाते हैं। युगांडा के खिलाफ लाए गए एक मामले में, यह तर्क दिया गया कि युगांडा ने ईएसी संधि का उल्लंघन किया जब उसने 14 आरोपी व्यक्तियों को जमानत मिलने के बाद फिर से गिरफ्तार कर लिया।³ न्यायालय ने, 2007 में, माना कि युगांडा ने ईएसी को नियंत्रित करने वाले मूलभूत सिद्धांतों में निहित कानून सिद्धांत के नियम का उल्लंघन किया है।

नवंबर 2008, 4 में दिए गए एक मामले के गुण-दोष पर अपने पहले फैसले में, एसएडीसी ट्रिब्यूनल ने माना कि जिम्बाब्वे सरकार द्वारा कृषि भूमि के अधिग्रहण से निपटने के लिए एसएडीसी संधि के आधार पर उसका अधिकार क्षेत्र था। संविधान में संशोधन (संशोधन 17)। ट्रिब्यूनल ने आगे पाया कि, चूंकि इसने श्वेत किसानों को लक्षित किया था, जिम्बाब्वे के भूमि सुधार कार्यक्रम ने एसएडीसी संधि के अनुच्छेद 6(2) का उल्लंघन किया, जो अन्य कारकों के अलावा नस्ल के आधार पर भेदभाव को गैरकानूनी मानता है। उपचारात्मक आदेश के अनुसार, ट्रिब्यूनल ने जिम्बाब्वे को आवेदकों की भूमि के कब्जे, कब्जे और स्वामित्व की रक्षा करने और उन लोगों को उचित मुआवजा देने का निर्देश दिया, जिनकी भूमि पहले ही जब्त कर ली गई थी।

उपक्षेत्रीय मानवाधिकार संरक्षण की दिशा में आशाजनक विकास हाल ही में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) में भी हुआ है, जिससे इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड और फिलीपींस के संस्थापक राज्यों को एक साथ लाया गया है। हालाँकि आसियान की स्थापना 1967 में हुई थी, एक औपचारिक संस्थापक संधि (आसियान चार्टर) को 2007 में ही अपनाया गया था। चार्टर में आसियान मानवाधिकार निकाय की स्थापना की परिकल्पना की गई है - एक प्रक्रिया जो अभी भी चल रही है।

अकेले राज्यों द्वारा नहीं

मानवाधिकारों में प्रगति केवल राज्यों पर निर्भर नहीं है। गैर-सरकारी संगठन महत्वपूर्ण मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने में बहुत प्रभावशाली रहे हैं और उन्होंने बाद में संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनाई गई घोषणाओं और संधियों के लिए जमीन तैयार की है।

जब किसी मुद्दे की विवादास्पदता राज्य की कार्यवाही को बाधित करती है तो नागरिक समाज की भूमिका विशेष महत्व रखती है। यौन अभिविन्यास और लिंग पहचान के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के अनुप्रयोग पर योग्याकार्ता सिद्धांत एक उदाहरण है। हालाँकि इसे नवंबर 2006 में केवल 25 देशों के 29 विशेषज्ञों द्वारा अपनाया गया था, दस्तावेज़ में शामिल 29 सिद्धांत - यौन अभिविन्यास और लिंग पहचान के संबंध में राज्य के दायित्वों से संबंधित - अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत बिंदु बन रहे हैं और संभवतः भविष्य की चर्चाओं का संचालन करेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून का परिदृश्य आज 60 साल पहले की तुलना में बिल्कुल अलग दिखता है जब सार्वभौमिक घोषणा को अपनाया गया था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून की मानक पहुंच का विस्तार करने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकार कानून का प्रसार हुआ है। हालाँकि, पिछले कुछ दशकों में, ध्यान मानवाधिकार मानदंडों के कार्यान्वयन और कार्यान्वयन, अधिक सुरक्षित सुरक्षा जाल के विकास और मानदंडों के प्रभाव के महत्वपूर्ण मूल्यांकन पर केंद्रित हो गया है। मानव अधिकारों के प्रति अधिक चिंता के साथ-साथ नरसंहार, मानवता के खिलाफ अपराध और युद्ध अपराधों के रूप में घोर मानव

अधिकारों के उल्लंघन के लिए जिम्मेदार लोगों की व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर भी अधिक जोर दिया गया है। 1998 में अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय सहित अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायाधिकरणों का निर्माण, अंतर्राष्ट्रीय कानून के मानवीकरण की दिशा में एक प्रवृत्ति का गठन करता है। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के और अधिक न्यायसंगतीकरण का उदाहरण अधिक अदालतों की स्थापना, मानवाधिकारों को शामिल करने के लिए न्यायिक अधिदेशों का विस्तार और इस बात की स्पष्ट स्वीकृति है कि सभी अधिकार न्यायसंगत हैं। आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध के वैकल्पिक प्रोटोकॉल को अपनाने के साथ, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के तहत अविभाज्यता के सिद्धांत की बहुत स्पष्ट स्वीकृति है। हालाँकि, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार व्यवस्था का निरंतर विकास गैर-राज्य अभिनेताओं पर काफी हद तक निर्भर करता है, जैसा कि "यौन अल्पसंख्यकों" के अधिकारों की मान्यता के लिए मानक आधार तैयार करने और उसकी वकालत करने में उनकी भूमिका से पता चलता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगले 60 वर्षों में परिदृश्य में नाटकीय परिवर्तन आने वाले हैं।

परिणाम

हममें से अधिकांश लोग मानवाधिकार और लोकतंत्र दोनों को महत्वपूर्ण मानते हैं। हम उन्हें एक साथ सुनने के इतने आदी हो गए हैं कि हम अक्सर उन्हें मानव स्वायत्तता, गरिमा, समानता और स्वतंत्रता के लिए एक सामान्य आकांक्षा व्यक्त करते हुए वस्तुतः पर्यायवाची मानते हैं। दूसरी ओर, हम ऐसे मामलों के बारे में भी आसानी से सोच सकते हैं जहां मानवाधिकार और लोकतंत्र एक दूसरे के साथ तनाव में हैं। उदाहरण के लिए, संविधान में निहित व्यक्तिगत स्वतंत्रताएं अक्सर बहुसंख्यक निर्णय लेने को प्रतिबंधित करने का काम करती हैं, जबकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, कई मानवाधिकार संधियाँ इस बात के लिए मानक निर्धारित करती हैं कि सरकारें, चाहे उनकी साख कितनी भी लोकतांत्रिक क्यों न हो, अपने नागरिकों के प्रति क्या कर सकती हैं।

कानून और लोकतंत्र के अपने दार्शनिक विवरण में, जर्गन हेबरमास ने इस तनाव को हल करने का दावा किया है। उनका कहना है कि मानवाधिकार और लोकतंत्र न केवल आवश्यक और परस्पर सहायक हैं, बल्कि आंतरिक रूप से संबंधित और 'सम-आदिम' या 'सह-मूल' हैं, क्योंकि वे पारस्परिक रूप से एक-दूसरे को मानते हैं (हेबरमास/हेबरमास 1996, हेबरमास 1998a)। इस पेपर में, मैं इस तथाकथित सह-मौलिकता थीसिस को बनाए रखने के लिए हेबरमेशियन अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत में संसाधनों को संबोधित करूंगा। हेबरमास ने लोकतंत्र के एक प्रवचन सिद्धांत के भीतर सह-मौलिकता का अपना विवरण प्रस्तुत किया, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की विशेष समस्याओं का कुछ दिया गया, जो कि सर्वदेशीयवाद, वैश्विक शासन और अंतर्राष्ट्रीय कानून के संवैधानिकीकरण पर उनके बाद के लेखन में एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। जैसा कि मैं तर्क दूंगा, हेबरमास के संवैधानिक लोकतंत्र के विवरण में मानवाधिकारों के अंतर्राष्ट्रीय अतिक्रमण को ध्यान में रखते हुए कठिनाइयाँ हैं, जबकि वैश्विक शासन का उनका मॉडल, लोकतांत्रिक वैधता के अभाव में, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों की वर्तमान संस्थागत प्रथा को कम करने के बराबर है। इसके बजाय, मेरा सुझाव है कि वैश्विक संस्थानों से घरेलू प्रतिस्पर्धा पर ध्यान केंद्रित करना, जिसके माध्यम से उप-राज्य हितधारक अंतरराष्ट्रीय मानदंडों को उपयुक्त और लागू करते हैं, न केवल सह-मौलिकता थीसिस के अनुरूप अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों के अभ्यास का एक प्रशंसनीय विवरण दर्शाता है, बल्कि यह भी सुझाव देता है मानवाधिकारों के दर्शन में अग्रणी राजनीतिक अवधारणाओं का एक व्यवहार्य विकल्प।

मेरा मुख्य तर्क यह है कि अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों के सिद्धांत के रूप में सह-मौलिकता थीसिस को मानवाधिकारों के वर्तमान अभ्यास के दो महत्वपूर्ण पहलुओं को ध्यान में रखना चाहिए: पहला, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून आज अक्सर घरेलू संवैधानिक कानून के साथ जुड़ा हुआ है। उदार लोकतंत्र की उत्पत्ति के बारे में एक मानक और अर्ध-ऐतिहासिक थीसिस के रूप में सह-मौलिकता का दावा, ज्यादातर एक स्व-संलग्न राष्ट्रीय संवैधानिक परियोजना की आदर्श धारणा के तहत तैयार किया गया है, लेकिन इसे इस वास्तविक अंतरराष्ट्रीय आयाम के लिए जिम्मेदार होना चाहिए। दूसरा, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों को मुख्य रूप से अंतर-राज्य स्तर पर शीर्ष से नीचे के संस्थानों के माध्यम से लागू नहीं किया जाता है, बल्कि उन संघर्षों के माध्यम से लागू किया जाता है जिनके द्वारा सामाजिक अभिनेता सार्वजनिक प्राधिकरण के खिलाफ समान खड़े होने का दावा करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मानदंडों को अपनाते हैं। इसलिए, प्रमुख समझ की तुलना में, मैं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों की राजनीति के घरेलू पहलुओं पर जोर देते हुए सह-मौलिकता को अधिक अंतर्राष्ट्रीयतावादी व्याख्या देना चाहता हूँ। उस प्रथा को इस तरह से समझने से अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में मानवाधिकारों और लोकतंत्र के सिद्धांत के रूप में सह-मौलिकता का दावा न्याय करना आसान हो जाता है।

जबकि हेबरमास ने दर्शन, कानून और सामाजिक विज्ञान के सभी विषयों में विद्वता को प्रभावित किया है, मौजूदा साहित्य में गहन मूल्यांकन का अभाव है जो अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था के एक सर्वदेशीय सिद्धांत के हिस्से के रूप में, अभ्यास के विवरण के साथ, हेबरमास के सह-मौलिकता के दावे का सामना करता है। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों की। यह लेख उस प्रयास में योगदान देता

है, बल्कि आम तौर पर अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत में भी योगदान देता है। मानवाधिकार और लोकतंत्र यकीनन सबसे शक्तिशाली समसामयिक न्यायोचित विमर्श हैं, और हम उनके मानक संबंध को कैसे देखते हैं, इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, प्रमुख राजनीतिक दार्शनिक (बेन्स देखें)। बेन्स 2009बी) इस बात से इनकार करते हैं कि समान राजनीतिक भागीदारी का मानव अधिकार है, जैसा कि सह-मौलिकता का दावा दावा करता है, एक विवाद जो परस्पर विरोधी विचारों में बदल जाता है, उदाहरण के लिए, किस प्रकार के शासन को अंतरराष्ट्रीय समाज के वैध सदस्यों के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। इसी तरह, इस बात पर जोर देना कि अधिकारों को लोकतांत्रिक कानून निर्माण के माध्यम से स्पष्ट किया जाना चाहिए, समकालीन अभ्यास के लिए एक तीव्र, महत्वपूर्ण मानक स्थापित करता है, जहां राज्य तेजी से अंतरराष्ट्रीय न्यायिक संस्थानों को, विशेष रूप से मानवाधिकार क्षेत्र में, अंतरराष्ट्रीय कानून की सामग्री को गतिशील रूप से विकसित करने के लिए अधिकृत करते हैं (बोगडांडी और वेन्ज़के) बोगडांडी और वेन्ज़के 2012 ; फोलेस्टल एट अल. फ़ॉलेस्टल, शेफ़र और उत्फ़स्टीन 2013)। इसलिए, यह विवादास्पद दावा कि मानवाधिकार और लोकतंत्र आंतरिक रूप से संबंधित हैं और सम-आदिम हैं, समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति की कुछ सबसे कठिन दुविधाओं के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने का वादा करता है।

मेरा तर्क इस प्रकार आगे बढ़ता है: सबसे पहले, मैं मानव अधिकारों और लोकतंत्र की सह-मौलिकता के हेबरमास के विवरण का पुनर्निर्माण करता हूँ और चर्चा करता हूँ, दूसरा, यह दो प्रमुख आपत्तियों को कैसे पूरा कर सकता है जो सह-मौलिकता थीसिस पर परिपत्रता का आरोप लगाते हैं। हालाँकि, इससे परे मेरा तर्क है कि क्या हम सह-मौलिकता के दावे को आधुनिक संवैधानिक लोकतंत्र की उत्पत्ति के अर्ध-समाजशास्त्रीय खाते के रूप में समझते हैं या निजी और सार्वजनिक स्वायत्तता के बीच आंतरिक संबंध के बारे में एक मानक तर्क के रूप में, एकल संवैधानिक की धारणा को छोड़ देते हैं। अलगाव में परियोजना सह-मौलिकता दावे के लिए विशेष चुनौतियों का खुलासा करती है। तीसरा, मैं विश्व सरकार के बिना हेबरमास के वैश्विक शासन के अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत के भीतर सह-मौलिकता के दावे के सामने आने वाली समस्याओं की रूपरेखा तैयार करता हूँ। महत्वपूर्ण रूप से, महानगरीय महत्वाकांक्षाओं वाले एक सिद्धांत के लिए, सह-मौलिकता थीसिस नागरिकों के अधिकारों से अलग, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों को उचित ठहराना मुश्किल बना देती है, क्योंकि सार्वभौमिक (वैश्विक) लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के अभाव में अधिकारों को विशेष सामग्री नहीं दी जा सकती है। चौथा, मैं एक वैकल्पिक व्याख्या प्रदान करता हूँ जिस पर अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों को बहुपक्षीय संस्थानों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई के बजाय घरेलू राजनीतिक संघर्षों के माध्यम से महसूस किया जाता है। मैं मानवाधिकारों और लोकतंत्र के लिए हेबरमेशियन दृष्टिकोण की व्यवहार्यता के लिए इस तर्कसंगत पुनर्निर्माण का क्या अर्थ है, इस पर विचार करके अपनी बात समाप्त करता हूँ। [16]

मानवाधिकार और लोकतंत्र की सह-मौलिकता

'जो पहले आता है', हेबरमास (हेबरमास 2001ए) पूछता है, 'आधुनिक बाजार समाज के सदस्यों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता या राजनीतिक भागीदारी के लिए लोकतांत्रिक नागरिकों के अधिकार?' कानून के शासन और लोकप्रिय संप्रभुता के सिद्धांत संवैधानिक लोकतंत्र की प्रतीत होने वाली विरोधाभासी अवधारणा में कैसे एकजुट हुए, इसका ऐतिहासिक विवरण देते हुए, हेबरमास ने अपना तर्क विकसित किया कि मानवाधिकार और लोकतंत्र आंतरिक रूप से संबंधित और सह-मूल हैं। कथित विरोधाभास यह है कि यदि हम लगातार संवैधानिक लोकतंत्र को उचित ठहराना चाहते हैं, तो ऐसा लगता है कि हमें दो सिद्धांतों, मानवाधिकार और लोकप्रिय संप्रभुता को रैंक करना होगा।

हेबरमास इस बात पर जोर देने वाले अकेले नहीं हैं कि व्यक्तिगत अधिकार और लोकतंत्र समान रूप से मौलिक और परस्पर संबंधित हैं; राजनीतिक वैधता का उनका सिद्धांत जॉन रॉल्स और अन्य लोगों के साथ महत्वपूर्ण आदान-प्रदान के माध्यम से विकसित हुआ (सारांश के लिए, हेड्रिक देखें) हेड्रिक 2010 ; फिनलेसन और फ्रीयेनहेगन फिनलेसन और फ्रीयेनहेगन 2011 ; पेडर्सन पेडर्सन 2012)। फिर भी, निजी और सार्वजनिक स्वायत्तता की सह-मौलिकता के बारे में दावा एक परिष्कृत सिद्धांत प्रस्तुत करता है कि स्वायत्तता के दो रूप आपस में क्यों जुड़े हुए हैं (कोहेन) कोहेन 1999)। इसके अलावा, हेबरमास की सह-मौलिकता थीसिस को आधुनिक संवैधानिक लोकतंत्रों के बारे में एक अर्ध-ऐतिहासिक थीसिस के रूप में भी पढ़ा जा सकता है, जिसमें सकारात्मक और वैध कानून की एक निश्चित अवधारणा शामिल थी और - अंततः - मानवाधिकार और लोकप्रिय संप्रभुता दोनों को 'उनकी मानक आत्म-समझ' में शामिल किया गया था। (हेबरमास हेबरमास 1996, 94)। हालाँकि, हेबरमास के शब्दों में, यह संबंध केवल एक ऐतिहासिक आकस्मिकता नहीं है, बल्कि वैचारिक या आंतरिक भी है।

हेबरमास के लिए, उदारवादी और रिपब्लिकन परंपराएं दोनों स्वायत्तता के मूल्य पर जोर देती हैं, लेकिन उदारवाद परंपरागत रूप से लोकतंत्र पर निजी स्वायत्तता को प्राथमिकता देता है, और लोग इस हद तक स्वतंत्र हैं कि वे खुद को महसूस कर सकते हैं और अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को पूरा कर सकते हैं (उसी अधिकार पर प्रभाव डाले बिना) अन्य)। इसके विपरीत, गणतंत्रवाद व्यक्तिगत अधिकारों को सार्वजनिक स्वायत्तता, राजनीतिक समुदाय के सामूहिक आत्मनिर्णय के अधीन कर देता है, और नागरिक

इस हद तक स्वतंत्र होते हैं कि वे उन कानूनों के अनुसार जीते हैं जो उन्होंने स्वयं दिए हैं। इन दो विकल्पों के बीच फंसा हुआ, 'राजनीतिक दर्शन वास्तव में कभी भी लोकप्रिय संप्रभुता और मानवाधिकारों के बीच संतुलन बनाने में सक्षम नहीं रहा है' (हेबरमास) हेबरमास 1998बी, 258). सह-मौलिकता थीसिस यही वादा करती है: वैचारिक स्तर पर एक को दूसरे के साथ सामंजस्य बिठाना; निजी स्वायत्तता के साथ सार्वजनिक (हेबरमास) हेबरमास 1996, 84).

प्रश्न को एक विरोधाभास की तरह प्रस्तुत करते हुए, हेबरमास ने अपने स्वयं के समाधान के लिए जमीन तैयार की: मानवाधिकार और लोकप्रिय संप्रभुता एक-दूसरे पर आधारित हैं और आंतरिक रूप से संबंधित हैं (सीएफ टेलर) टेलर 2000). लौकिक मुर्गी और अंडे की तरह, न तो पहले आता है, न ही दोनों:

तर्कसंगत प्रवचनों में भाग लेने वालों के रूप में, कानून के तहत सहयोगियों को यह जांचने में सक्षम होना चाहिए कि क्या कोई विवादित मानदंड संभावित रूप से प्रभावित सभी लोगों की सहमति से मेल खाता है या मिल सकता है। नतीजतन, लोकप्रिय संप्रभुता और मानवाधिकारों के बीच अपेक्षित आंतरिक संबंध इस तथ्य में निहित है कि अधिकारों की प्रणाली सटीक रूप से उन स्थितियों को बताती है जिनके तहत वैध कानून की उत्पत्ति के लिए आवश्यक संचार के रूपों को कानूनी रूप से संस्थागत बनाया जा सकता है (हेबरमास) हेबरमास 1996, 104).

इसलिए, यदि लोगों को अपने समाज को नियंत्रित करने वाले कानूनों को बनाने में भाग लेकर अपनी लोकप्रिय संप्रभुता का प्रयोग करने में सक्षम होना है, तो उन्हें उन अधिकारों से भी संपन्न होना चाहिए जो उन्हें एक-दूसरे के साथ तर्कसंगत रूप से संवाद करने और विचार-विमर्श करने की अनुमति देते हैं।

अब, यह समाधान केवल उन अधिकारों को उचित ठहराने के लिए प्रतीत होता है जो लोगों को एक-दूसरे के साथ विचार-विमर्श में शामिल होने में सक्षम बनाते हैं - उदाहरण के लिए भाग लेने और स्वतंत्र रूप से बोलने के अधिकार - लेकिन उन अन्य अधिकारों को नहीं जिन्हें हम महत्वपूर्ण मान सकते हैं, जैसे कि नागरिक स्वतंत्रता सरकारी हस्तक्षेप से व्यक्तिगत गोपनीयता की रक्षा करना। राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के समान अधिकार लोकतंत्र की अवधारणा में परिभाषा के अनुसार निहित हैं, लेकिन अन्य, गैर-राजनीतिक स्वतंत्रताएं, कथित विरोधाभास के लिए जिम्मेदार हैं, ठीक इसलिए क्योंकि वे पहले से ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया द्वारा निर्धारित नहीं हैं। उस स्थिति में, हेबरमास केवल अधिकारों को साधनात्मक रूप से उचित ठहराने में सक्षम होगा: केवल वे विशेष अधिकार उचित हैं जो लोगों को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लेने में सक्षम बनाते हैं। इसके अलावा, यदि मानवाधिकार मुख्य रूप से लोगों को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लेने में सक्षम बनाने के लिए काम करते हैं, तो अधिकारों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि क्या वे वास्तव में ऐसा करते हैं, और उन्हें वैध रूप से उस हद तक प्रतिबंधित किया जा सकता है जो वे नहीं करते हैं।

ऐसी आपत्तियों की आशंका करते हुए, हेबरमास का तर्क है कि गैर-राजनीतिक अधिकार पहले से ही कानूनी आदेश द्वारा निहित हैं (हेबरमास) हेबरमास 1998a, हेबरमास 1998बी, 259). एक बुनियादी सामाजिक तथ्य के रूप में, आधुनिक, जटिल समाजों के नागरिकों को कानून के माध्यम से अपनी बातचीत को विनियमित और समन्वयित करना चाहिए। कानून न्यूनतम व्यक्तिगत स्वतंत्रता की एक बुनियादी योजना भी स्थापित करता है। नागरिकों की कानूनी व्यक्ति की स्थिति को परिभाषित करने वाले अधिकारों की एक प्रणाली इस प्रकार कानूनी माध्यम का गठन करती है (हेबरमास) हेबरमास 1996, 119). सबसे पहले, कानून लोगों को यह तय करने की अनुमति देता है कि राजनीतिक या मानक कारणों से अनुपालन करना है या नहीं, और इस प्रकार व्यक्तियों को अनुपालन के लिए अपने कारणों का हिसाब न देने की न्यूनतम स्वतंत्रता देता है (हेबरमास) हेबरमास 1996, 120). हेबरमास के शब्दों में, कानूनी माध्यम द्वारा निर्धारित अधिकार इस प्रकार किसी के समकक्ष को जवाब देने के लिए संचार स्वतंत्रता के दायित्व को निलंबित करके निजी स्वायत्तता की गारंटी देते हैं: आप दूसरों को अपनी बात न समझाने के लिए स्वतंत्र हैं। दूसरा, आधुनिक कानून एजेंटों को 'कार्य करने की एक निश्चित छूट देता है: लोग जो चाहें करने के लिए स्वतंत्र हैं जब तक कि कानून उस पर रोक नहीं लगाता' (हेबरमास) हेबरमास 1998बी, 256; सी एफ हेबरमास हेबरमास 2010)।

हालाँकि, अकेले कानूनी कोड समान स्वतंत्रता का केवल एक न्यूनतम विवरण देता है, और कानून की वैधता या सकारात्मकता यह नहीं बताती है कि यह वैध क्यों है। कानूनी आदेश की वैधता की व्याख्या करने और समान स्वतंत्रता का पूरा विवरण देने के लिए, हेबरमास प्रवचन सिद्धांत का आह्वान करता है, जो उन स्थितियों को निर्धारित करता है जिनके तहत कार्रवाई के मानदंड, चाहे नैतिक हों या कानूनी, मान्य हैं। प्रवचन सिद्धांत में कहा गया है कि '[जो] वे कार्य मानदंड मान्य हैं जिनके लिए सभी संभावित प्रभावित व्यक्ति तर्कसंगत प्रवचनों में प्रतिभागियों के रूप में सहमत हो सकते हैं' (हेबरमास) हेबरमास 1996, 107). हालाँकि, नैतिक मानदंडों के विपरीत, हेबरमास के विचार में, कानूनी मानदंड न केवल ज्ञान की प्रतीकात्मक प्रणालियाँ हैं, बल्कि वे संस्थागत स्तर पर 'कार्रवाई की प्रणाली' के रूप में बाध्यकारी भी हो सकते हैं। यह निर्दिष्ट करने के लिए कि कानूनी रूप लेने वाले कार्रवाई मानदंडों के लिए प्रवचन सिद्धांत का क्या अर्थ है, हेबरमास लोकतंत्र के सिद्धांत का परिचय देता है, जो वैध कानून बनाने की प्रक्रिया स्थापित करता

लिए जिम्मेदार होने में विफल रहे। हालाँकि, यहाँ हम उन समस्याओं का अनुमान लगाते हैं जिनका अधिकारों का यह सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों के सिद्धांत के रूप में सामना करेगा। मानवाधिकारों को कानूनी संहिता और वास्तविक चर्चाओं पर आधारित करके, हेबरमास को यह समझाने में कठिनाई हो रही है कि वैश्विक लोकतांत्रिक कानूनी व्यवस्था के अभाव में सार्वभौमिक मानवाधिकार कैसे हो सकते हैं।

सह-मौलिकता के साथ समस्याएँ

मानवाधिकारों की अंतर्राष्ट्रीय समस्या की ओर मुड़ने से पहले, आइए हम सह-मौलिकता थीसिस के खिलाफ दो आपत्तियों पर विचार करें, जो सुझाव देते हैं, पहला, कि प्रवचन सिद्धांत स्वायत्तता के उदार सिद्धांत को मानता है, और दूसरा, ऐसी मानक बाधाओं के बिना, विचार-विमर्श प्रक्रिया को पुनः वापसी की समस्या का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि यहाँ तक कि व्यक्तियों को स्वतंत्र और समान समझना, जो प्रक्रिया के मापदंडों को निर्धारित करता है, भी मुश्किल में पड़ जाएगा।

पहली समस्या की पहचान करते हुए, आलोचकों ने तर्क दिया है कि हेबरमास अपने स्वयं के सिद्धांत को गलत समझते हैं: प्रवचन सिद्धांत वैधता के बुनियादी उदार विचार के रूप में व्यक्तियों को स्वतंत्र और समान के रूप में मौलिक सम्मान प्रदान करता है। चार्ल्स लारमोर के रूप में (लारमोर 1999, 621) का तर्क है, यदि 'हम मानते हैं कि हमारे राजनीतिक जीवन को किसी सिद्धांत जैसे [प्रवचन सिद्धांत] द्वारा व्यवस्थित किया जाना चाहिए, तो ऐसा केवल इसलिए है क्योंकि हम व्यक्तियों के लिए समान सम्मान के नैतिक सिद्धांत को अपनाते हैं।' इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति का केवल उन राजनीतिक सिद्धांतों से बंधे होने का अधिकार, जिनके औचित्य को वह तर्कसंगत रूप से स्वीकार कर सकता है, लोकतांत्रिक स्व-शासन की सीमाएं तय करता है, लारमोर का दावा है, क्योंकि यह निर्धारित करता है कि लोकप्रिय इच्छा की किस प्रकार की अभिव्यक्ति को लोकतांत्रिक माना जाएगा। और भले ही संवैधानिक अधिकार और नागरिक स्वतंत्रताएं सार्वजनिक स्वायत्तता को सक्षम करने के लिए काम कर सकती हैं, वे स्वतंत्र रूप से और पर्याप्त रूप से उचित हैं क्योंकि वे नागरिक समाज के सदस्यों के रूप में उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन के साथ व्यक्तियों की स्वतंत्रता की रक्षा करते हैं (रॉल्स)रॉल्स 1996, 420)।

सह-मौलिकता के दावे के मर्म पर इन प्रहारों का जवाब देते हुए हेबरमास (हेबरमास 1998ए) उतना ही त्याग देता है जब वह सुझाव देता है कि निजी स्वायत्तता के अधिकारों का 'स्पष्ट रूप से' एक आंतरिक मूल्य है जिसे लोकतांत्रिक इच्छा-निर्माण के लिए उनके महत्वपूर्ण मूल्य में शामिल नहीं किया जा सकता है। अधिक दृढ़ता से, स्टीफ़न रूममेन्स (रूममेन्स 2006) सुझाव देता है कि जबकि हेबरमासियों को यह स्वीकार करना चाहिए कि प्रवचन सिद्धांत में गैर-तुच्छ नैतिक पूर्वधारणाएं शामिल हैं, उन पूर्वधारणाओं को हेबरमास प्रवचन नैतिकता से निकाला जा सकता है, जबकि अधिकारों को उचित ठहराने के लिए कानून के माध्यम पर उनकी निर्भरता कम हो जाती है: यह कानून का माध्यम नहीं है रूममेन्स का तर्क है कि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता को आकार देता है, लेकिन विचार-विमर्श प्रथाओं की नैतिक पूर्व शर्तें। दूसरी ओर, किसी को संदेह हो सकता है कि सह-मौलिकता के दावे को बनाए रखने की इस वैकल्पिक रणनीति से, प्रवचन नैतिकता इस विचार को धोखा देगी कि विचार-विमर्श प्रथाओं की पूर्व शर्तों को भी संवादपूर्वक तैयार किया जाना चाहिए।

यह दूसरी, संबंधित समस्या की ओर ले जाता है। दोनों का दावा करने से एक प्रतिगामी परिणाम मिलता है (ए) कि मानदंडों को केवल स्वतंत्र और समान व्यक्तियों के बीच वास्तविक, सार्वजनिक विचार-विमर्श के माध्यम से वैध किया जा सकता है और (बी) ऐसी प्रक्रियाओं के मूलभूत पैरामीटर - यहाँ तक कि यह निर्दिष्ट करते हुए कि 'स्वतंत्र और समान व्यक्तियों' का क्या मतलब है - होना चाहिए लोकतांत्रिक विचार-विमर्श प्रक्रियाओं के माध्यम से वैध। अर्थात्, हमें कानूनों की विचारपूर्वक जांच करने (और इस प्रकार उन्हें वैधता प्रदान करने) और वैध मौलिक कानूनों को सामने लाने के लिए कानूनी रूप से गठित लोकतांत्रिक प्रक्रिया की आवश्यकता है। लेकिन वह प्रक्रिया स्वयं एक वैचारिक रूप से पूर्व प्रक्रियात्मक घटना का परिणाम होनी चाहिए, जो वैध कानूनों द्वारा गठित हो, जो बदले में, एक और भी पूर्व वैध प्रक्रिया का परिणाम होनी चाहिए, और इसी तरह (मिशेलमैनमाइकलमैन 1997, 169)।

हेबरमास, या हेबरमेशियन, इस प्रतिगमन समस्या से कैसे बच सकते थे? मैं तीन समाधान सुझाता हूँ (cf. कास्सर)। कास्सर 2006)। सबसे पहले, कोई यह तर्क दे सकता है कि भागीदारी के कुछ मूल अधिकारों को छोड़कर, विचार-विमर्श प्रक्रिया में सब कुछ शामिल है। इस प्रकार विचार-विमर्श प्रक्रिया को वैध बनाने और वैध परिणाम देने में सक्षम होने के लिए व्यक्तियों को स्वतंत्र और समान रूप से भाग लेने का मौलिक अधिकार होना चाहिए (रूममेन्स)रूममेन्स 2006)। लेकिन लोकतंत्र के मूल्यों को इस आवश्यकता से बाहर करने का कोई सैद्धांतिक कारण नहीं है कि मौलिक कानूनों को वास्तविक विचार-विमर्श प्रक्रियाओं में फिर से प्रस्तुत करना हमेशा संभव होना चाहिए, और इसलिए हमें फिर से प्रतिगमन का सामना करना पड़ता है। जबकि भाग लेने का अधिकार मानने के व्यावहारिक कारण हो सकते हैं (उदाहरण के लिए वापसी के जोखिम से बचने के लिए, हम बस यह निर्णय ले सकते हैं कि इस

अधिकार को छोड़कर, सब कुछ हासिल करने के लिए है), ऐसा करना सह-मौलिकता के साथ असंगत लगता है थीसिस. दूसरा दृष्टिकोण प्रारंभिक शर्त के रूप में भाग लेने के अधिकार को बताएगा, ताकि भले ही विचार-विमर्श अंततः सभी तरह से नीचे चला जाए, यह पहले चरण में ऐसा नहीं करेगा। यह समाधान भी सह-मौलिकता थीसिस के साथ असंगत है, क्योंकि यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया से पहले संकल्पनात्मक रूप से एक स्वतंत्र और समान व्यक्ति के रूप में भाग लेने का अधिकार भी देता है।

एक तीसरा समाधान व्यक्तियों की स्वतंत्रता और समानता को निर्दिष्ट करने वाले प्रावधानों को अधिकांश समय पहुंच से बाहर मान सकता है, लेकिन हमेशा नहीं: व्यक्तियों के स्वतंत्र और विचार-विमर्श में समान होने के अधिकारों को संवैधानिक रूप से मजबूत किया जाना चाहिए और सुरक्षित रखने के लिए निरंतर परिवर्तन से बचाया जाना चाहिए। कानून के शासन के लिए और नागरिकों के लिए उन अधिकारों का आनंद लेने और अभ्यास करने के लिए आवश्यक स्थिरता और पूर्वानुमानशीलता (सीएफ. रॉल्स)। रॉल्स 1996, 406). इस प्रकार नागरिक स्वतंत्रताओं को सार्वजनिक विचार-विमर्श पर बाहरी रूप से थोपा नहीं जाएगा और वे संशोधन के लिए खुले हैं, लेकिन हर समय नहीं। हालाँकि, यह समाधान यह भी मानता है कि कुछ मूल्य विचार-विमर्श की लोकतांत्रिक प्रक्रिया से अधिक मौलिक हैं, और इस प्रकार वैध रूप से बाधित होते हैं। सह-मौलिकता थीसिस इसी बात से इनकार करती है। फिर, इनमें से किसी भी शर्त पर समस्या को हल करने के लिए उदारवाद को रियायतें देने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

लोकतांत्रिक संवैधानिकता के अपने खाते में प्रतिगमन समस्या से अवगत होने के नाते, हेबरमास का तर्क है कि चक्र दुष्ट के बजाय गुणी है। विचार-विमर्श लोकतंत्र आवश्यक रूप से 'एक पुनरावर्ती या स्व-संदर्भित रूप से संरचित व्यावहारिक विचार' होगा, लेकिन यह इसे तार्किक या प्रक्रियात्मक रूप से असंभव नहीं बनाता है (मिशेलमैनमाइकलमैन 1997, 151). हालाँकि ऐसी पुनरावर्ती प्रक्रियाएँ अनंत हो सकती हैं, वे स्वयं को कायम रख सकती हैं: 'कानून के शासन का विचार कानून के तेजी से बढ़ते स्व-अनुप्रयोग को गति प्रदान करता है' (हेबरमासहेबरमास 1996, 39). इस प्रकार, मूल संवैधानिक क्षण अधिकारों की एक प्रणाली निर्धारित करता है जो इसके द्वारा शुरू की गई संवैधानिक परियोजना द्वारा पूर्वव्यापी रूप से वैधता प्राप्त करता है (क्रोनिन)क्रोनिन 2006). लंबे समय में, संवैधानिक परियोजना एक 'स्व-सुधारात्मक सीखने की प्रक्रिया' है जिसमें नागरिकों का समूह शामिल होता है (हेबरमास)हेबरमास 2001ए)। यदि हम सह-मौलिकता थीसिस को न केवल एक मानक दावे के रूप में, बल्कि संवैधानिक अधिकारों और लोकतंत्र के बारे में एक समाजशास्त्रीय दावे के रूप में भी समझते हैं, तो इस पुनरावर्ती औचित्य को और अधिक विश्वसनीयता मिल सकती है। हेबरमास इस प्रकार मानते हैं कि आम पहचान और सहानुभूति लोकतंत्र को सक्षम करने में एक महत्वपूर्ण व्यावहारिक कार्य करती है, और संवैधानिक सिद्धांतों को 'नागरिकों के राष्ट्र के ऐतिहासिक में स्थित होना चाहिए' (हेबरमासहेबरमास 1996, 499).

इस बात पर जोर देकर प्रतिगमन समस्या को संबोधित करना कि कैसे एक प्रारंभिक संवैधानिक स्थापना को कानून के तहत सहयोगियों की लगातार पीढ़ियों द्वारा पुनरावर्ती रूप से उचित ठहराया जा सकता है, यह भी रेखांकित करता है कि सह-मौलिकता का दावा न केवल एक कानूनी प्रणाली के रूप में एक राज्य को मानता है, बल्कि एक विशेष संवैधानिक परियोजना को भी मानता है।, जिसे पुनरावर्ती रूप से उचित ठहराया जाना है। लेकिन यदि ऐसा है, तो मानवाधिकार, और न केवल नागरिकों की सार्वजनिक और निजी स्वायत्तता, आंतरिक रूप से लोकतंत्र से कैसे संबंधित हो सकते हैं? यह हमें सह-मौलिकता थीसिस के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों को उचित ठहराने की समस्या की ओर ले जाता है।

घरेलू संवैधानिकता और अंतर्राष्ट्रीय अधिकार

अगले भाग में, मैं यह पता लगाऊंगा कि सह-मौलिकता का दावा हेबरमास की वैश्विक व्यवस्था सुधार की योजना में कैसे फिट बैठता है। उस पर जाने से पहले, मुझे एक तीसरी समस्या की ओर इशारा करना चाहिए जो तब उत्पन्न होती है जब हम आस-पास की दुनिया से अलग एकल संवैधानिक लोकतंत्र की आदर्श धारणा के तहत तैयार की गई सह-मौलिकता थीसिस को वास्तविक-मौजूदा संवैधानिक परियोजनाओं पर लागू करते हैं, जो आज जटिल हैं अंतर्राष्ट्रीय कानूनी आदेशों के साथ अंतर्संबंधित। इस धारणा को शिथिल करने से सह-मौलिकता थीसिस का परीक्षण होता है, चाहे हम थीसिस को लोकतांत्रिक रेक्सस्टाट की उत्पत्ति के अर्ध-समाजशास्त्रीय खाते के रूप में पढ़ें या सार्वजनिक और निजी स्वायत्तता के बीच आंतरिक संबंध के बारे में एक मानक दावे के रूप में पढ़ें।

हकीकत में, कुछ संवैधानिक लोकतांत्रिक परियोजनाएं आज अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून से अलग हैं। उदाहरण के तौर पर यूरोपीय मानवाधिकार आदेश को लें। पाद लेख 'मानवाधिकार पर यूरोपीय कन्वेंशन (1953) के सभी 47 राज्य दलों ने कन्वेंशन को घरेलू कानूनी आदेश में शामिल कर लिया है, जिससे कन्वेंशन सभी सार्वजनिक प्राधिकरणों पर बाध्यकारी हो गया है और राष्ट्रीय न्यायाधीशों द्वारा लागू करने योग्य हो गया है। वास्तव में, प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रीय अदालतों के समक्ष मौलिक अधिकारों की वकालत करने का अधिकार है, और, एक बार राष्ट्रीय उपचार समाप्त हो जाने पर, यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय में याचिका दायर

करने का अधिकार है, जो समाज के विकास को ध्यान में रखते हुए कन्वेंशन की व्याख्या करता है और गतिशील रूप से लागू करता है (स्टोन-स्वीट)पत्थर-मीठा2012, 63). इसके अलावा, यूरोपीय संघ के नागरिकों के लिए, सर्वोच्चता और प्रत्यक्ष प्रभाव के सिद्धांतों के साथ, यूरोपीय न्यायालय द्वारा विकसित मौलिक अधिकार, 'राष्ट्रीय संविधानों की तुलना में गैर-भेदभाव कानून का एक अधिक महत्वपूर्ण स्रोत हैं' (स्टोन-स्वीट)पत्थर-मीठा2012, 65). इसके अलावा, अधिकांश यूरोपीय राज्यों ने कई अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार सम्मेलनों की पुष्टि की है, जिसमें व्यक्तिगत शिकायत तंत्र स्थापित करने वाले वैकल्पिक प्रोटोकॉल शामिल हैं, और, अलग-अलग डिग्री तक, उन्हें घरेलू कानून में शामिल किया गया है। इसलिए, घरेलू संविधान के भीतर और बाहर, यूरोप का एक विशिष्ट नागरिक राज्य अधिकारियों के खिलाफ अपने अधिकारों का दावा करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानदंडों और निकायों के घने नेटवर्क में अपील कर सकता है।

अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून और घरेलू संवैधानिक परियोजनाओं का यह जाल सह-मौलिकता थीसिस के लिए चुनौतीपूर्ण है। सबसे पहले, अधिकारों का अंतर्संबंध संवैधानिक लोकतंत्र की समाजशास्त्रीय उत्पत्ति के अर्ध-ऐतिहासिक तर्कसंगत पुनर्निर्माण के रूप में पढ़े जाने वाले सह-मौलिकता के दावे में एक विसंगति पैदा करता है। हालाँकि, आदर्श रूप से, इस तरह का पुनर्निर्माण उन अंतरराष्ट्रीय, बाहरी कारकों को ध्यान में रखने में विफल रहता है, जिन्होंने समकालीन संवैधानिक लोकतंत्र का सह-गठन किया है, जिसमें लोकतंत्र के लिए तेजी से अनुकूल अंतरराष्ट्रीय संस्थागत वातावरण और घरेलू स्तर पर कानून का शासन और, विशेष रूप से, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों का उद्भव शामिल है। सिस्टम. इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार व्यवस्था न केवल उन कमियों को भरती है जहाँ घरेलू संवैधानिक अधिकारों की सुरक्षा कमजोर प्रदर्शन करती है; यह कई अनूठे कार्य भी प्राप्त करता है: सरकारों को वैध अंतरराष्ट्रीय चिंता का विषय प्रदान करना; सरकारों को उनके अधिकार पर बाहरी कानूनी सीमाओं से बांधना; और यह स्पष्ट करते हुए कि नागरिकों के अधिकारों का भी सार्वभौमिक मानव अधिकारों (गार्डबाम) के विचार में उनका मानक आधार है गार्डबाम2009, 254ff.). फिर भी सह-मौलिकता थीसिस मानवाधिकारों की अंतरराष्ट्रीय उत्पत्ति को समझाने के लिए कोई अनुमान प्रदान नहीं करती है।

दूसरा, निजी और सार्वजनिक स्वायत्तता के बीच वैचारिक संबंध के बारे में एक मानक दावे के रूप में सह-मौलिकता के लिए, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार शासन कई चुनौतियाँ पेश करता है। अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार सिद्धांत अधिकारों की एक ठोस योजना को स्पष्ट करता है, और, घरेलू संविधानों की तुलना में, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संधियों में संशोधन करना और बदलना आम तौर पर अधिक कठिन होता है, खासकर नागरिकों के दृष्टिकोण से। इस कठोरता के कारण - अपेक्षाकृत विशिष्ट सामग्री और जटिल संशोधन प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप - अंतरराष्ट्रीय न्यायिक संस्थानों ने न केवल संधियों की व्याख्या करने में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून विकसित करने और बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रकार, अंतरराष्ट्रीय न्यायिक संस्थाएं नागरिकों को प्राप्त मानवाधिकारों को सामग्री और आकार देने में गहराई से शामिल हैं, फिर भी उन्हें लोकतांत्रिक वैधता से और भी दूर कर दिया गया है, और परिणामस्वरूप, स्वतंत्र और समान नागरिकों के आदर्श से, जो वैध कानूनों के लेखक और प्राप्तकर्ता दोनों हैं। इसलिए, न केवल अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों में औचित्य और वैधता का अभाव होगा जब तक कि विचार-विमर्श प्रक्रियाओं को विश्व स्तर पर संस्थागत नहीं बनाया जाता (मैककार्थी)मैककार्थी1999, 198); मेरा निवेदन है कि घरेलू संवैधानिक अधिकार भी ऐसे ही होंगे, क्योंकि वे अंतरराष्ट्रीय मानदंडों से ओत-प्रोत हैं।

निःसंदेह, कोई केवल यह कह सकता है कि अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार शासन में स्पष्ट रूप से सह-मौलिकता के दावे के लिए आवश्यक लोकतांत्रिक वैधता का अभाव है। लेकिन यदि ऐसा है: समस्या का समाधान कैसे करें? संवैधानिक और मानवाधिकार दोनों के सिद्धांत के रूप में, सह-मौलिकता का दावा एक दुविधा का सामना करता है: या तो अधिकारों को वैश्विक कानूनी व्यवस्था के माध्यम से व्यक्त करने की आवश्यकता है, जिसमें लोकतांत्रिक वैधता की आत्मनिर्भर प्रक्रियाएं शामिल हैं जिसके माध्यम से नागरिक आधिकारिक अधिकारों के विषय बन सकते हैं। अर्थ, या अंतरराष्ट्रीय अधिकार व्यवस्थाओं को कम करने की आवश्यकता है और अधिकारों की अभिव्यक्ति को घरेलू लोकतंत्र के माध्यम से वैध, राज्यों के कानूनी-राजनीतिक आदेशों तक ही सीमित रखा जाना चाहिए। दोनों समाधान असंतोषजनक प्रतीत होते हैं: वैश्विक मार्ग अत्यधिक मांग वाला प्रतीत होता है, क्योंकि मौजूदा विश्व व्यवस्था में लोकतांत्रिक वैधीकरण प्रक्रियाओं का अभाव है, जबकि राष्ट्रीय मार्ग अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून द्वारा किए गए अद्वितीय कार्यों को त्याग देगा, जिसके लिए एक घरेलू संविधान क्षतिपूर्ति नहीं कर सकता है और जो कई लोग मानते हैं उसे खारिज कर सकता है। मानव अधिकारों के विचार के लिए आवश्यक: उनकी सार्वभौमिक वैधता। निम्नलिखित में, मैं दोनों विकल्पों का पता लगाऊंगा, यह देखने के लिए कि क्या सह-मौलिकता थीसिस को बनाए रखने के लिए उन्हें संशोधित किया जा सकता है।

हालाँकि, सबसे पहले, मैं इस बात पर विचार करके अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा कि सह-मौलिकता थीसिस इस दुविधा को क्यों पैदा करती है। हेबरमास ने आधुनिक राज्य के कानूनी माध्यम में अधिकारों और लोकतंत्र की सह-मौलिकता के बारे में अपनी थीसिस को न केवल ऐतिहासिक रूप से विकसित होने के विवरण के रूप में प्रस्तुत किया है, बल्कि, जैसा कि हमने देखा है, उनके

मानक अंतर्संबंध को स्पष्ट करने के लिए भी किया है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, 'नागरिक स्वतंत्रता' और 'मानवाधिकार' को विनिमेय शब्दों के रूप में उपयोग करना अवधारणाओं को भ्रमित करना नहीं है: इसके विपरीत, कानूनी रूप से गठित लोकतांत्रिक समुदाय का नागरिक होना वास्तविक अधिकार प्राप्त करने के लिए एक आवश्यक शर्त है। कानून के तहत सहयोगियों द्वारा कानून के माध्यम से अपने सामान्य मामलों को विनियमित करने का निर्णय लेने से पहले अमूर्त अर्थ में भी अधिकार मौजूद नहीं हो सकते हैं। और यदि व्यक्तिगत अधिकार राज्य से पहले अस्तित्व में नहीं हैं, तो वे राज्य के बाहर भी अस्तित्व में नहीं हैं। जबकि हेबरमास वैश्विक शासन के सिद्धांतकार के रूप में राज्य से संवैधानिकता को अलग करने के आंदोलन में भाग लेते हैं और उन तरीकों को सिद्धांतित करते हैं जिनमें शासन के नए तरीके 'उत्तर-राष्ट्रीय नक्षत्र' की शुरुआत करते हैं, लोकतंत्र का उनका मानक सिद्धांत, महत्वपूर्ण मामलों में, पर निर्भर करता है सांख्यिकी प्रतिमान, जिसके अनुसार स्वतंत्र और समान नागरिक संविधान की घटक शक्ति और मूलभूत प्राधिकारी के रूप में कार्य करते हैं (सीएफ. कुम्भ)कुम्भ2009)। अलग ढंग से कहें तो, हेबरमास का अंतर्राष्ट्रीय कानून के संवैधानिकीकरण का विवरण अंततः संवैधानिक कानून के अपर्याप्त अंतर्राष्ट्रीयकरण से ग्रस्त है।

वैश्विक राजनीतिक व्यवस्था में अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार

हम अंततः उस समस्या की ओर मुड़ते हैं जो इस दावे से उत्पन्न होती है कि मानवाधिकार और लोकतंत्र सह-मूल और अन्योन्याश्रित हैं, जब हम इसे कानून के तहत सार्वजनिक और निजी स्वायत्तता के औचित्य के रूप में नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों के एक सर्वदेशीय सिद्धांत के रूप में पढ़ते हैं। समस्या यह है कि मानवाधिकारों के विचार को कैसे उचित ठहराया जाए यदि हम इस बात पर जोर देते हैं कि ऐसे अधिकारों को केवल कानूनी-लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था के माध्यम से - मानक, वैचारिक और व्यावहारिक रूप से महसूस किया जा सकता है, एक संस्थागत आवश्यकता जिसे न तो अंतरराष्ट्रीय संस्थान और न ही कई राज्य संतुष्ट करते हैं। इस पहली ने हाल ही में हेबरमास के साथ-साथ आलोचकों को भी अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का एक महानगरीय मॉडल विकसित करने में व्यस्त कर दिया है। बदले में, मैं हेबरमास के प्रस्ताव का विश्लेषण करूंगा, इस पर कुछ महत्वपूर्ण आपत्तियां उठाऊंगा और एक वैकल्पिक रणनीति का सुझाव दूंगा। मेरा उद्देश्य बहु-स्तरीय वैश्विक व्यवस्था के लिए हेबरमास के विश्वव्यापी डिजाइन की खूबियों का आकलन करना नहीं है (उदाहरण के लिए फाइन और स्मिथ देखें)फाइन और स्मिथ2003 ; फिलिनफिलिन2003 ; एंडरसनएंडरसन2005 ; हेड्रिकहेड्रिक2007 ; हमरिचहम्रिच2007 ; Scheuermanशूअरमैन2008), बल्कि सह-मौलिकता थीसिस को बनाए रखने के लिए इस निर्माण के भीतर संसाधनों का आकलन करना है। वैश्विक शासन पर अपने कार्यों में, हेबरमास मानवाधिकारों की लोकतांत्रिक वैधता के बारे में दिलचस्प रूप से संक्षिप्त हैं, और मौजूदा अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार प्रथाएं और संस्थाएं उनके मॉडल में केवल एक परिधीय भूमिका निभाती हैं, भले ही वे तेजी से संप्रभुता-बाधित अंतरराष्ट्रीय कानून के एक महत्वपूर्ण मामले का प्रतिनिधित्व करते हैं। और सह-मौलिकता दावे के लिए स्पष्ट वैधीकरण चुनौतियां खड़ी करता है। मैं तर्क दूंगा कि हेबरमास का वैश्विक शासन का मॉडल मौजूदा अंतरराष्ट्रीय अधिकार व्यवस्था के एक बड़े हस्तांतरण का प्रतिनिधित्व करेगा और फिर भी इस विचार के साथ न्याय करने में विफल है कि अधिकारों के लिए लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता है। निम्नलिखित अनुभाग में, मैं मानवाधिकारों के अभ्यास के अनुभवजन्य विवरण के साथ मानवाधिकारों के लिए प्रवचन-सैद्धांतिक दृष्टिकोण का सामना करके, इस दलदल से बाहर निकलने का एक रास्ता सुझाऊंगा।

हाल के कार्यों की एक श्रृंखला में, हेबरमास ने वैश्विक मार्ग का पता लगाया है, जिसमें वैश्विक शासन के तीन-स्तरीय महानगरीय मॉडल की कल्पना की गई है, जो कि विश्व सरकार के बिना वैश्विक घरेलू राजनीति को स्थापित करेगा। मॉडल तीन अलग-अलग स्तरों पर राजनीतिक शासन को अलग करता है, जिसमें विभिन्न प्रकार के अभिनेताओं का वर्चस्व होता है: सुपरनैशनल स्तर पर, एक सुधारित संयुक्त राष्ट्र को गौरव मिलता है, जो 'शांति हासिल करने और दुनिया भर में मानवाधिकारों को लागू करने में माहिर है' (हेबरमास)हेबरमास2008बी)। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, कार्यात्मक, बहुपक्षीय शासन 'विश्व घरेलू नीति' के विविध नियामक मुद्दों पर बातचीत करते हैं, जैसे कि आर्थिक पुनर्वितरण, पर्यावरणीय समस्याएं और सामूहिक जोखिम, और 'वैश्विक खिलाड़ियों' की एक प्रबंधनीय संख्या - यूरोपीय संघ पर आधारित क्षेत्रीय संस्थाएं -। दोनों हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं और महाद्वीपीय पैमाने पर नीतियों को लागू करते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर, अंततः, राज्य प्राधिकार और लोकतांत्रिक वैधता का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत बने रहेंगे।

एक सुधारित, संवैधानिक वैश्विक राजनीतिक व्यवस्था की इस योजना के अंतर्गत, मानवाधिकारों को कैसे स्पष्ट, वैध और कार्यान्वित किया जाए? हेबरमास का कहना है कि सुपरनैशनल विश्व संगठन की क्षमता दो कार्यों तक ही सीमित होगी: शांति सुनिश्चित करना और वैश्विक स्तर पर मानवाधिकारों की रक्षा करना। विश्व संगठन राज्यों को अपने क्षेत्र के भीतर अपने नागरिकों के बुनियादी अधिकारों की गारंटी देने के लिए अधिकृत करेगा, लेकिन अंतरराष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन करने वाली व्यक्तिगत सरकारों के खिलाफ उपाय करने का अधिकार बरकरार रखेगा; इस प्रकार यह राज्यों के साथ एक पदानुक्रमित संबंध में खड़ा होगा, लेकिन फिर भी आपात स्थिति में बल नियोजित करने के लिए सक्षम और इच्छुक सदस्यों से मंजूरी देने की क्षमता उधार लेगा (हेबरमास)हेबरमास2008बी)। विश्व संगठन की महासभा, जिसके प्रतिनिधियों को महानगरीय और राष्ट्रीय चिंताओं दोनों को संतुलित करने की आवश्यकता होगी, मानवाधिकारों के मानकों सहित वैश्विक राजनीति के मूलभूत सिद्धांतों की व्याख्या और विस्तार

करने के प्रभारी होंगे, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बातचीत के लिए बाध्यकारी होंगे। स्तर (हेबरमास) हेबरमास 2008 बी)। हेबरमास की यह भी परिकल्पना है कि संपन्न राज्यों को कम भाग्यशाली समाजों के प्रति एक निश्चित महानगरीय एकजुटता जुटानी चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी महानगरीय नागरिकों को अपने राजनीतिक और नागरिक बुनियादी अधिकारों का अभ्यास करने का उचित अवसर मिले।

इसलिए, मानवाधिकार मानदंडों को विस्तृत करने और लागू करने की संस्थागत जिम्मेदारी सुपरनैशनल स्तर पर है, जो इस मुद्दे को उठाती है कि इस क्षेत्र में इसका अधिकार कैसे वैध होगा। हेबरमास वैश्विक, महानगरीय लोकतंत्र और विश्व सरकार को अस्वीकार करता है क्योंकि, उनका दावा है, एकजुटता के आवश्यक बंधन वैश्विक स्तर पर इतने मजबूत नहीं होंगे कि एक विश्वव्यापी लोकतंत्र को मजबूत कर सकें (सीएफ. हेबरमास) हेबरमास 2011)। हालाँकि उन्हें कोई संरचनात्मक कारण नहीं दिखता कि राष्ट्रीय नागरिक एकजुटता और कल्याणकारी राज्य की नीतियां राष्ट्र-राज्य से आगे क्यों नहीं बढ़ सकतीं, वैश्विक क्षेत्र में बस एक नैतिक-राजनीतिक पहचान और महानगरीय एकजुटता का अभाव होगा जो वैश्विक लोकतंत्र का भार सहन कर सके। इसके अलावा, एक सर्व-समावेशी वैश्विक लोकतांत्रिक समुदाय के महानगरीय डेमोक्रेटों के आह्वान के खिलाफ, हेबरमास (हेबरमास 2001 बी , 107) का तर्क है कि लोकतांत्रिक आत्मनिर्णय के लिए एक असीमित समुदाय के बजाय एक बंद, सीमांकित समूह की आवश्यकता होती है।

हालाँकि, हेबरमास अंतरराष्ट्रीय कानून के धीरे-धीरे एक बाध्यकारी कानूनी आदेश में विकसित होने की संभावना देखता है जो वैश्विक शासन पर निष्क्रिय बाधाएँ डालता है। उनका समाधान हिंसा के वैध साधनों पर एकाधिकार रखने वाले एक पदानुक्रमित नौकरशाही तंत्र के रूप में राज्य की अवधारणाओं और स्वतंत्र और समान नागरिकों के एक क्षैतिज संघ को परिभाषित करने वाले संविधान को अलग करना है (हेबरमास) हेबरमास 2004 , 135; सी एफ हेबरमास हेबरमास 2008 बी)। इस प्रकार, उनका तर्क है, प्रवर्तन के लिए किसी वैश्विक राज्य या विश्व महासंघ पर भरोसा किए बिना, न ही किसी विशेष डेमो और संवैधानिक स्थापना क्षण पर निर्भर किए बिना, सुपरनैशनल स्तर को अभी भी संवैधानिक बनाया जा सकता है। हालाँकि यह नवजात वैश्विक संविधान कथित तौर पर लोकतंत्र और सरकारी प्राधिकरण से अलग है, इसे लोकतांत्रिक, संवैधानिक राज्यों और राष्ट्रीय संसदों (हेबरमास) से वैधता के 'संचार प्रवाह' से जुड़ा रहना चाहिए हेबरमास 2004 , 139, हेबरमास 2008 ए , 322)।

मैं एक सुधारित वैश्विक व्यवस्था के लिए हेबरमास के मॉडल और उसमें मानवाधिकार और लोकतंत्र द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका पर चार मुख्य आपत्तियाँ प्रस्तुत करूंगा, जो (1) मानवाधिकारों के राजनीतिक कार्य, (2) उनकी लोकतांत्रिक वैधता, (3) निरंतर जारी रहने से संबंधित हैं। अनुदार शासनों का अस्तित्व, और (4) संस्थागत परिवर्तन की गतिशीलता। सबसे पहले, हेबरमास मानवाधिकारों और शांति के बारे में निर्णयों की राजनीतिक प्रकृति को कमतर आंकते हैं, यह मानते हुए कि सुपरनैशनल नीति निर्धारण कानूनी प्रवर्तन के मामले होंगे, जबकि वास्तविक राजनीतिक मामले (जैसे कि पुनर्वितरण से जुड़े मुद्दे) को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सौंप दिया जाएगा। टॉड हेड्रिक का तर्क है कि यह आश्वासन खोखला लगता है (हेड्रिक 2007 , 407), 'मानो मानवाधिकारों की मूल सामग्री, अनुप्रयोग और प्रवर्तन को लेकर कोई राजनीतिक विवाद नहीं है।'

शायद हेबरमास मानवाधिकारों के बारे में निर्णयों की राजनीतिक प्रकृति को कम करके आंकना चाहता है क्योंकि उसके पास अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पेश करने के लिए केवल कमजोर, अप्रत्यक्ष वैधीकरण तंत्र हैं। उदाहरण के लिए, वह इंगित करता है कि यदि सुरक्षा परिषद 'निष्पक्ष प्रक्रियाओं के अनुसार शांति सुनिश्चित करने और मानव अधिकारों की रक्षा करने के मुद्दों से निपटेगी, इसलिए निष्पक्ष और गैर-चयनात्मक तरीके से' (हेबरमास) हेबरमास 2008 ए , 343), यह मौजूदा विश्वव्यापी पृष्ठभूमि सर्वसम्मति से समर्थन पर भरोसा कर सकता है, जहाँ तक इसके कार्य मानव अधिकारों की सीमित व्याख्या पर आधारित हैं। हेबरमास यहाँ मानवाधिकारों की न्यूनतम राजनीतिक अवधारणाओं से सहमत प्रतीत होते हैं, जो मानवाधिकारों के मुख्य कार्य को वैधता के अंतर-सरकारी मानदंडों पर सहमति के रूप में देखते हैं, जिसका बड़े पैमाने पर उल्लंघन अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप के कारणों के रूप में काम कर सकता है (एंडरसन) एंडरसन 2005 ; बेनिसबेन्स 2009 ए)। इस दृष्टिकोण से मुझे दो समस्याएँ दिखाई देती हैं। सबसे पहले, मानवाधिकारों का एक वास्तविक रूप से न्यूनतम विवरण अधिक महत्वाकांक्षी व्याख्याओं जितना ही राजनीतिक रूप से विवादास्पद हो सकता है, क्योंकि सबसे विवादास्पद मानवाधिकार मानदंड भी स्वयं को निर्दिष्ट नहीं करते हैं: वे अपनी सामग्री, अपनी सापेक्ष प्राथमिकता के बारे में असहमति के लिए खुले हैं जहाँ वे संघर्ष करते हैं, और जब वे अधिक नुकसान से बचने के लिए अनुमतिपूर्वक निरस्त किया जा सकता है (बुकानन) बुकानन 2008), आदि। इसके अलावा, संयुक्त राष्ट्र की वर्तमान प्रथा दर्शाती है कि जब बुनियादी मानवाधिकारों का कार्यान्वयन महान शक्तियों की सद्भावना और सैन्य कौशल पर निर्भर बहुपक्षीय संस्थानों को सौंप दिया जाता है, तो राजनीतिकरण और चयनात्मक पूर्वाग्रह आमतौर पर पनपते हैं - जैसा कि हेबरमास है अच्छे से जानकारी। और जबकि ड्राइंग डेस्क पर एक दार्शनिक शायद नीतिगत मुद्दों को अलग-अलग कार्यात्मक डोमेन में बड़े करीने से क्रमबद्ध कर सकता है, राजनीतिक व्यवहार में नीतिगत समस्याओं की परिभाषा अक्सर अपने आप में राजनीतिक संघर्ष का मामला होती है (उदाहरण के

लिए, लोग इस बात पर उचित रूप से असहमत होते हैं कि क्या जलवायु परिवर्तन अनुकूलन मानव अधिकारों की रक्षा या आर्थिक बोझ के पुनर्वितरण का मामला है।

दूसरा, मौजूदा समकालीन अभ्यास की तुलना में, हेबरमास का दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों द्वारा निर्भाई जाने वाली कई राजनीतिक भूमिकाओं की उपेक्षा करता है। वे न केवल घरेलू संविधानों में अधिकार प्रावधानों को पूरक और मजबूत करते हैं; वे नागरिकों, गैर सरकारी संगठनों, संधि निकायों या अन्य राज्यों द्वारा सरकारों की निगरानी और आलोचना के लिए मानक भी प्रदान करते हैं; मानवाधिकारों के उल्लंघन के लिए सरकारी अधिकारियों पर घरेलू या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कब मुकदमा चलाया जाना चाहिए; अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार न्यायालयों के समक्ष शिकायतों पर विचार करने और मामलों पर निर्णय देने के लिए; और विदेशी सहायता, राजनीतिक सुधार और अच्छी सरकार के लिए (cf. निकेल) [निकेल 2006, 270]। विशेष रूप से, हेबरमास संयुक्त राष्ट्र के पर्यवेक्षी अंगों और अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (सीएफ हेबरमास) के प्रति उदार उत्साह व्यक्त करने के अलावा, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार व्यवस्था के न्यायिक संस्थानों को कोई प्रमुख कार्य नहीं सौंपता है। [हेबरमास 2004, 161; हेबरमास 2010]। विश्व व्यापार संगठन के विवाद निपटान तंत्र (हेबरमास) पर उनकी टिप्पणियों से निर्णय लेना [हेबरमास 2008, 349], उन्हें अंतरराष्ट्रीय न्यायिक अंगों के प्रति संदेह है, जिसमें संबंधित लोकतांत्रिक विधायिका द्वारा प्रदान की गई प्रत्यक्ष वैधता का अभाव है जो कानून बना सकती है और न्यायिक निर्णयों को सही कर सकती है - एक संदेह जो, संभवतः, मौजूदा अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार न्यायपालिका पर लागू होगा, भी, क्योंकि इसमें समान वैधता चुनौतियां शामिल हैं, उदाहरण के लिए, जब एक अदालत मूल इरादे से परे अपनी संस्थापक अंतरराष्ट्रीय संधि की गतिशील रूप से व्याख्या करती है। फिर भी, इस हद तक कि अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार शासन की अप्रत्यक्ष वैधता मानवाधिकार मानदंडों को आधिकारिक रूप से निर्दिष्ट करने के लिए निष्पक्ष और निष्पक्ष प्रक्रियाओं को मानती है, अर्ध-स्वतंत्र क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संधि निकाय संयुक्त राष्ट्र के राजनीतिक निकायों की तुलना में अधिक संभावित उम्मीदवार प्रतीत होते हैं। निष्कर्ष निकालने के लिए: मानवाधिकारों के राजनीतिक कार्य को सीमित करके और मानवाधिकारों पर अधिकार को मौजूदा, बहुआयामी अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार शासन के बजाय सुरक्षा परिषद के पास रखकर, हेबरमास के संस्थागत प्रस्तावों का तात्पर्य वर्तमान अभ्यास की तुलना में गिरावट है।

दूसरी समस्या यह है कि वैश्विक शासन के अपने मॉडल में, हेबरमास लोकतांत्रिक वैधता की भूमिका को कम करके आंकते हैं, जो सह-मौलिकता के दावे के लिए महत्वपूर्ण है। हेबरमास का सुझाव है कि अधिराष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर प्राधिकार की वैधता को लोकतांत्रिक, संवैधानिक राष्ट्र-राज्यों से वैधता के प्रवाह पर निर्भर होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, यदि सुधारित वैश्विक संस्थान स्थापित संवैधानिक सिद्धांतों और प्रक्रियाओं के अनुरूप हैं, तो एक अनौपचारिक वैश्विक जनमत 'वैधता की शेष आवश्यकता' को पूरा करने के लिए पर्याप्त हो सकता है (हेबरमास/हेबरमास 2008बी)। अब, वह सही हो सकते हैं कि सुपरनैशनल स्तर पर वास्तव में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की बहुत कम संभावना है, इसलिए हमें वर्तमान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के अधिक सीमित लेकिन सुधारित संस्करण के साथ समझौता करना चाहिए, जहां जो भी लोकतांत्रिक वैधता है वह राष्ट्रीय संसदों से प्रसारित होनी चाहिए संवैधानिक लोकतंत्रों का। लेकिन हेबरमास के इस दावे के लिए कि कानून का शासन और लोकतंत्र आंतरिक रूप से संबंधित हैं, वैधीकरण का इतना पतला, प्रतिनिधिमंडल-आधारित विवरण अत्यधिक समस्याग्रस्त बना रहना चाहिए, जो उन सभी सेटिंग्स पर लागू होता है जहां कानून का शासन संस्थागत है (हेड्रिक) [हेड्रिक 2007]।

इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों को सार और आकार देने का अधिकार और व्यापक कानूनी ढांचे को अप्रत्यक्ष रूप से वैध सुपरनैशनल स्तर पर रखना, जो राज्यों के साथ एक पदानुक्रमित संबंध में खड़ा है, का अर्थ यह प्रतीत होता है कि मानवाधिकार लोकतंत्र पर थोपे गए हैं (या किसी राजनीतिक समुदाय पर) बाहर से, कानून के तहत सहयोगियों के नियंत्रण से परे। जबकि विश्व व्यवस्था को वैधता प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर लोकतंत्र पर भरोसा करना अधिक व्यवहार्य और अधिक वांछनीय दोनों लग सकता है, ऐसी गिरावट की स्थिति एक और व्यापार-बंद के साथ आती है: यह सह-मौलिकता में महानगरीय महत्वाकांक्षा को कमजोर करती है दावा और मानवाधिकारों की सार्वभौमिक नैतिक वैधता। यदि मानवाधिकारों को केवल एक वास्तविक ऐतिहासिक विधायक द्वारा ही महत्व दिया जा सकता है, और यदि वह अधिकार प्रत्येक राष्ट्रीय संवैधानिक परियोजना में वितरित किया जाता है, तो विभिन्न लोकतांत्रिक राज्यों में अधिकारों को अलग-अलग तरीके से व्यक्त और कार्यान्वित किया जाएगा। परिणाम लोकतंत्र के साथ अन्योन्याश्रित सार्वभौमिक मानवाधिकारों की एक प्रणाली नहीं होगी, बल्कि (अधिकतम) अधिकारों की समानांतर प्रणालियों की एक श्रृंखला होगी, जो प्रत्येक संवैधानिक परियोजना के भीतर वैध और प्रमाणित होंगी और इस प्रकार संभवतः प्रत्येक राज्य में काफी अलग ढंग से संस्थागत होंगी (फाइन और स्मिथ) [फाइन और स्मिथ 2003, 471 एफएफ.]। हेबरमास कमोबेश यही स्वीकार करता है जब वह इस बात पर जोर देता है कि मूल अधिकारों को एक विशेष विधायक द्वारा तैयार किया जाना चाहिए। फिर भी यह समाधान यह स्पष्ट करने में विफल रहता है कि मानवाधिकारों को कैसे उचित ठहराया जाएगा और उन सेटिंग्स में निर्दिष्ट किया जाएगा जहां लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं अनुपस्थित हैं या गंभीर रूप से त्रुटिपूर्ण हैं, और किसी को संदेह हो सकता है कि ये ऐसी स्थितियां हैं जहां ऐसे औचित्य की सबसे अधिक आवश्यकता है।

संबंधित रूप से, तीसरी समस्या यह है कि क्या सह-मौलिकता थीसिस इस परेशान करने वाले तथ्य का कारण बन सकती है कि आज सभी राज्य लोकतंत्र नहीं हैं। सिद्धांत रूप में, हेबरमास को अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली (मून) में राज्यों से बहुत अधिक अनुरूपता की आवश्यकता होती है चंद्रमा 2003)। उदाहरण के लिए, रॉल्स के विपरीत, हेबरमास गैर-उदारवादी लेकिन सभ्य लोगों को बर्दाश्त करने की अनुमति नहीं देता है: सभी राज्यों को अधिकार-आधारित, संवैधानिक लोकतंत्र बनने की आवश्यकता होगी (cf. टिनेवेल्ट और मर्टेंस टिनेवेल्ट और मर्टेंस 2009)। हालाँकि, यह समस्या केवल वैचारिक नहीं है, बल्कि राजनीतिक भी है, उदाहरण के लिए, यह चिंता का विषय है कि अंतरराष्ट्रीय समाज में ऐसे शासनों की क्या भूमिका है - यदि कोई है - जो हेबरमास के संवैधानिक लोकतंत्र और मानवाधिकारों के उच्च मानकों से कम हैं। मामले को दरकिनार करने के लिए, हेबरमास के रूप में (हेबरमास 2008बी) अंतरराष्ट्रीय राजनीति के बारे में सिद्धांत बनाने के लिए एक गलत दृष्टिकोण प्रतीत होता है, क्योंकि विभिन्न प्रकार के शासन अस्तित्व में हैं और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के किसी भी विश्वव्यापी सिद्धांत के लिए एक कठिन परीक्षा पेश करते हैं। व्यवहार में, हेबरमास सत्तावादी, अधिकारों का उल्लंघन करने वाले शासन को अंतरराष्ट्रीय समाज के सदस्यों के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार दिखता है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के चल रहे संवैधानिकीकरण के लिए भुगतान की जाने वाली विरोधाभासी कीमत (हेबरमास/हेबरमास 2004, 163 एफएफ.)। हालाँकि, भले ही विश्व संगठन की नीतियों को लोकतंत्रों से वैधता के प्रवाह के माध्यम से वैध किया गया हो, उन्हें शायद ही गैर-लोकतंत्रों की आबादी पर वैध रूप से बाध्यकारी माना जा सकता है, जो ऊपर की ओर सौंपने के लिए कोई आंतरिक वैधता उत्पन्न नहीं करते हैं (सीएफ. कैनी/कैनी 2009)।

अंततः, उसके मॉडल को साकार करने के लिए राज्यों और इसमें शामिल अन्य एजेंटों को कार्य करने के लिए कौन मनाएगा या मनाएगा? हेबरमास ने कुछ ऐसे कारकों की पहचान की है जो वैश्विक व्यवस्था को उसके वांछित मॉडल की ओर धकेलेंगे, इसके अलावा सरकारों और लोगों को सीखने की आवश्यकता की ओर इशारा करते हुए, 'मन के एक अड़ियल ढांचे पर काबू पाने' और महानगरीय मानदंडों को आंतरिक बनाने की आवश्यकता है (हेबरमास/हेबरमास 2008बी)। यह चूक दो मायनों में समस्याग्रस्त है: सबसे पहले, मॉडल की सैद्धांतिक विश्वसनीयता कम हो जाती है यदि यह उस गतिशीलता को निर्दिष्ट करने में विफल रहता है जिसके द्वारा दुनिया वर्तमान मामलों की स्थिति से उसके पसंदीदा राजनीतिक क्रम में जा सकती है। हेबरमास अंतरराष्ट्रीय राजनीति की एक आश्चर्यजनक रूप से यथार्थवादी छवि चित्रित करता है, जिसमें स्व-रुचि वाले वैश्विक खिलाड़ियों के बीच शक्ति-आधारित वार्ता का बोलबाला है (हमरिक)हम्रिच 2007)। ऐसे दुर्गम मैदान में, अंतरराष्ट्रीय कानून को संवैधानिक बनाने की संभावनाएं निश्चित रूप से निराशाजनक लगती हैं। फिर भी वह यह स्वीकार करने में विफल रहे कि लगातार राजनीतिक मतभेदों ने संयुक्त राष्ट्र में सुधार की शर्तें कैसे तय कीं। जबकि पिछले सात दशकों में प्रमुख संस्थागत सुधार के लिए कई कॉल देखी गई हैं, विश्व संगठन ने हमेशा क्रमिक रूप से, धीरे-धीरे और अनिच्छा से सुधार किया है, क्योंकि इसके संस्थापकों ने जानबूझकर चार्टर संशोधन को कठिन बना दिया है और क्योंकि बड़ी और छोटी शक्तियां समान रूप से संस्थागत यथास्थिति पसंद करती हैं (लक)भाग्य 2005)। शायद अनजाने में (हेबरमास/हेबरमास 2007), हेबरमास अंतरराष्ट्रीय संबंध विद्वानों की तुलना में काफी अधिक संशयवादी हैं, जिन्होंने विश्व राजनीति के लिए संचार कार्रवाई के अपने सिद्धांत को इस संभावना के लिए विनियोजित किया है कि बातचीत के विचारशील तरीके राज्यों के हितों और पहचान को बदलने में मदद करते हैं (रिसे/रिसे 2000)। तर्कसंगत रूप से, अंतर्राष्ट्रीय कानून का संवैधानिकीकरण पहले ही न केवल हेबरमास की विश्व राजनीति की यथार्थवादी तस्वीर से आगे बढ़ चुका है, बल्कि वैश्विक शासन के उनके मॉडल से भी आगे बढ़ चुका है, जो मानक वैधीकरण के में बहुत अधिक निंदनीय है (हमरिक)हम्रिच 2007, 395)। वास्तव में, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार प्रणाली, महत्वपूर्ण मामलों में, विशेष रूप से यूरोप में, अंतर्राष्ट्रीय कानून का एक संवैधानिक शासन बन गई है, हालाँकि अंतर्राष्ट्रीय कानून को अधिक व्यापक रूप से संवैधानिक बनाने में इसकी भूमिका को बढ़ा-चढ़ाकर पेश नहीं किया जाना चाहिए (गार्डबाउम/गार्डबाउम 2009, 245 एफ, 251)। दूसरा, परिवर्तन की गतिशीलता को छोड़ने से वैश्विक राजनीतिक व्यवस्था के लिए एक मानक आदर्श के रूप में मॉडल की व्यावहारिक व्यवहार्यता और प्रासंगिकता भी कम हो जाती है: यह राजनीतिक कार्रवाई का मार्गदर्शन करने में विफल रहता है। इस प्रकार के मानक सिद्धांत के लिए, इसे एक गंभीर दोष के रूप में गिना जाना चाहिए।

मानवाधिकार संघर्ष लोकतांत्रिक पुनरावृत्तियों के रूप में

वैश्विक शासन के अपने मॉडल को विस्तृत करते हुए, हेबरमास ने खुद को एक कोने में चित्रित किया है, जहां वह अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों के सिद्धांत के रूप में सह-मौलिकता थीसिस से समझौता करते हैं। उनका कठोर, ऊपर से नीचे तक का संस्थागत खाका इसके महानगरीय वादे को पूरा करने में विफल रहता है (बोहमान)।बोहमान 2011) और इसकी प्रवचन-सैद्धांतिक क्षमता (हमरिक)हम्रिच 2007)। तो एक हेबरमेशियन इस दलदल से कैसे बाहर निकल सकता है? [14,15,16]

इस अंतिम भाग में, मैं एक समाधान का प्रयास करूंगा। मेरा तर्क दो संसाधनों पर आधारित है: सेयला बेनहबीब का (बेनहबीब 2004, 2006, बेनहबीब, वाल्ड्रॉन, होनिग, किम्लिका और पोस्ट 2011) मानवाधिकारों के एक प्रवचन सिद्धांत पर हालिया काम, जिसका सामना मैं अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों के अभ्यास के लिए अनुभवजन्य अंतर्राष्ट्रीय संबंध दृष्टिकोण से करता हूँ। इस

प्रकार, मानक राजनीतिक दर्शन के साथ सामाजिक वैज्ञानिक छात्रवृत्ति का संयोजन हमें विश्व राजनीति में परिवर्तन की सीमाओं और संभावनाओं को चार्ट करने में मदद करता है, जो यूटोपियनवाद और संशयवाद के विकल्पों का संकेत देता है (मूल्य)कीमत2008)।

कुल मिलाकर, बेनहबीब का सह-मौलिकता का संस्करण हेबरमास के अनुरूप है और इसलिए, मैं तर्क दूंगा, वह समान समस्याओं का सामना करती है। विशेष रूप से, इस बात पर जोर देना कि लोकतांत्रिक आत्मनिर्णय मानव अधिकारों को वैध बनाने के लिए एक पूर्वधारणा है, असहज निष्कर्ष की ओर ले जाता है कि मानव अधिकार केवल वहीं प्रभावी और वैध होंगे जहां उनकी सबसे कम आवश्यकता है, जो न केवल मानक रूप से असंतोषजनक है बल्कि ऐतिहासिक अनुभव के साथ खराब रूप से फिट बैठता है। इसके बजाय, मैं आदर्श संस्थानों से वास्तविक प्रथाओं पर जोर देने का सुझाव देता हूँ जिसके द्वारा व्यक्ति और समूह सरकारों के मुकाबले अपने अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय कानूनी मानदंडों का उपयोग करते हैं। बेनहबीब की न्यायशास्त्रीयता और लोकतांत्रिक पुनरावृत्तियों की अवधारणाओं को तदनुसार संशोधित करने से संकेत मिलता है कि मानवाधिकारों का एक प्रवचन-सैद्धांतिक खाता हेबरमास के विश्वव्यापी मॉडल में कम से कम कुछ समस्याओं से कैसे बच सकता है।

हन्ना एरेन्ड्ट की 'अधिकार पाने के अधिकार' की धारणा पर निर्माण करते हुए, बेनहबीब एक तीन-चरणीय प्रवचन-सैद्धांतिक खाते का सुझाव देते हैं, जो कारण बताने के लिए, विवेकपूर्ण प्रक्रियाओं में निहित एक बुनियादी मानदंड में अधिकारों को स्थापित करता है (सीएफ बेनेस)बेन्स2009ए)। यह मानदंड, बदले में, प्रत्येक मनुष्य के अधिकार प्राप्त करने के एक मौलिक अधिकार का तात्पर्य करता है, अर्थात्, किसी समुदाय के सदस्य के कानूनी अधिकार प्राप्त करने का नैतिक अधिकार। अंत में, अधिकार के नैतिक सिद्धांत को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के माध्यम से, कानूनी अधिकारों की अधिक व्यापक योजना में निर्दिष्ट करने की आवश्यकता है। संक्षेप में: 'मानवाधिकार नैतिक सिद्धांत हैं जो आपकी संचारी स्वतंत्रता के प्रयोग की रक्षा करते हैं और जिन्हें कानूनी रूप में मूर्त रूप देने की आवश्यकता होती है' (बेनहबीब)बेनहबीब, वाल्ड्रॉन, होनिग, किम्लिका और पोस्ट2011 , 68). इस प्रकार, बेनहबीब भी मानवाधिकारों और आत्मनिर्णय के बीच आंतरिक संबंध पर जोर देते हैं:

अधिकारों का सिद्धांत लोकतांत्रिक संप्रभु की इच्छा को बांधता है क्योंकि स्वशासन को एक सार्थक अभ्यास बनाने के लिए कानून के तहत सभी की समानता को मान्यता दी जानी चाहिए। एक बार जब कानून देने वाले नागरिकों की यह लोकतांत्रिक समानता मान ली जाती है, तो प्रत्येक राज्य व्यवस्था में अधिकारों की अनुसूची विधायी प्रक्रियाओं की विवेकपूर्ण अभिव्यक्ति द्वारा निर्धारित की जा सकती है (बेनहबीब)बेनहबीब, वाल्ड्रॉन, होनिग, किम्लिका और पोस्ट2011 , 74एफएफ।)।

यह, कमोबेश, हेबरमास के सह-मौलिकता के विवरण से मेल खाता है और समान समस्याओं का सामना करता है। बेनहबीब अधिकारों और लोकतंत्र के सह-संवैधानिक होने के लिए आदर्श संस्थागत पूर्वधारणाओं पर जोर देते हैं, और इस बात पर जोर देते हैं कि वास्तव में, महानगरीय मानदंडों को एक राजनीतिक समुदाय के भीतर कानून के माध्यम से लागू, वैध और कार्यान्वित किया जाना चाहिए - वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से नागरिक सम्मान करते हैं खुद को कानून के लेखक और अभिभाषक दोनों के रूप में (बेनहबीब एट अल।) बेनहबीब2006 , 48एफएफ.)। एक राज्य मानवाधिकारों को लागू करने (या उल्लंघन करने) के लिए आवश्यक सरकारी तंत्र और उनके चल रहे वैधीकरण के लिए आवश्यक प्रतिनिधि सार्वजनिक संस्थानों (बेनहबीब एट अल) दोनों की पेशकश करता है। बेनहबीब2006 , 169). वह मानती हैं कि राजनीतिक व्यवस्थाएँ कानूनी रूप से और संवैधानिक रूप से अधिकारों की योजना की व्याख्या और देने के तरीके में वैध रूप से भिन्न हो सकती हैं, लेकिन केवल तब तक जब तक इस तरह की विविधताएं सार्वजनिक स्वायत्तता (बेनहबीब) के अभ्यास से उत्पन्न होती हैं बेनहबीब, वाल्ड्रॉन, होनिग, किम्लिका और पोस्ट2011 , 74एफएफ।)। इसलिए, अधिकारों की अनुसूची को वैध बनाने के लिए एक मानक और तथ्यात्मक पूर्वधारणा के रूप में लोकतांत्रिक आत्मनिर्णय पर यह जोर सार्वभौमिकता की समस्या की ओर ले जाता है: इस हद तक कि मानव अधिकारों के वैधीकरण और कार्यान्वयन के लिए 'उदार लोकतंत्रों द्वारा प्रदान की गई साइटों' की आवश्यकता होती है। ' (बेनहबीब एट अल. बेनहबीब2006 , 169), मानवाधिकार मानदंड केवल मानक रूप से उचित और अनुभवजन्य रूप से उत्पादक होंगे जहां वे कम से कम आवश्यक होंगे। इसके अलावा, पहले से मौजूद लोकतांत्रिक संस्थानों के साथ इस संबंध पर जोर देने से कथित लोकतंत्रों को मानवाधिकारों की व्याख्या और कार्यान्वयन के लिए बहुत अधिक छूट मिल सकती है और यह कम आंका जा सकता है कि स्व-सरकारी संस्थानों की अनुपस्थिति में भी लोग वास्तव में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानदंडों को कैसे उपयुक्त बना सकते हैं। अंततः, कभी-कभी बेनहबीब (बेनहबीब2004 , 29एफएफ.), हेबरमास की तरह, सुझाव देता प्रतीत होता है कि अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार शासन का मुख्य कार्य सामूहिक अत्याचारों की रोकथाम के लिए अंतर-राज्य मानदंडों को परिभाषित करना है।

इस दृष्टिकोण के विरुद्ध, मैं सुझाव दूंगा कि समान स्थिति के लिए राजनीतिक संघर्षों के में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार अभ्यास पर पुनर्विचार, मुख्य रूप से घरेलू स्तर पर किया जा सकता है, दोनों एक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में सह-मौलिकता थीसिस को समझ सकते हैं और इसे प्रमुख राजनीतिक को चुनौती देने की अनुमति दे सकते हैं। मानवाधिकार की अवधारणाएँ, ऐतिहासिक रूप से, मानवाधिकारों के लिए संघर्ष उन स्थितियों को स्थापित करने के लिए आवश्यक रहा है जिनके तहत नागरिक व्यक्तिगत स्वायत्तता

और सामूहिक स्वशासन दोनों का आनंद ले सकते हैं, एक विषय जिसे हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय संबंध छात्रवृत्ति के विभिन्न पहलुओं में खोजा गया है। क्रिश्चियन रेउस-स्मिट्स (रेउस-स्मिट2011बी, रेउस-स्मिट2013) ऐतिहासिक-समाजशास्त्रीय कार्य से पता चलता है कि व्यक्तिगत अधिकारों के लिए लामबंदी ने वेस्टफेलियन समझौते से लेकर सोवियत संघ के अंत तक, अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली के विस्तार की पांच क्रमिक लहरों के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐसी प्रत्येक लहर में, शाही प्रजा ने शाही शासन की पदानुक्रमित प्रणालियों की वैधता और उनका समर्थन करने वाले संस्थागत असमान अधिकारों को चुनौती देने के लिए व्यक्तिगत अधिकारों की धारणाएँ जुटाई हैं। अंततः, चूंकि शाही केंद्र वैधता के ऐसे संकटों को हल करने में विफल रहे हैं, इसलिए प्रजा के लोगों ने स्वतंत्र और समान रूप से नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के सर्वोत्तम तरीके के रूप में स्वतंत्र संप्रभु राज्यों की स्थापना का विकल्प चुना है। इन लहरों में से चौथी - दूसरे विश्व युद्ध के बाद उपनिवेशवाद से मुक्ति - ने शेष यूरोपीय साम्राज्यों को विघटित कर दिया, लेकिन साम्राज्य की संस्था को भी अवैध बना दिया, एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें उभरते अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार शासन ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई: प्रारंभिक स्वतंत्र राज्यों ने इसके भीतर काम किया संयुक्त राष्ट्र ने अंतर्राष्ट्रीय अधिकार विधेयक की स्थापना की, और इन नए अंतर्राष्ट्रीय उपकरणों में आत्मनिर्णय का एक मानदंड तैयार किया। पांचवीं लहर में, घरेलू विपक्षी समूहों ने कम्युनिस्ट शासन को चुनौती देने के लिए हेलसिंकी फाइनल एक्ट (1975) में मान्यता प्राप्त मानवाधिकार मानदंडों को जुटाया, जिससे सोवियत साम्राज्य के विघटन में योगदान हुआ (थॉमस)थॉमस2001)।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध अनुसंधान की एक अन्य पंक्ति ने इस विस्तारित अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार शासन के प्रभाव का आकलन करने की कोशिश की है। इसके राजनीतिक महत्व को अक्सर गलत समझा जाता है क्योंकि यह अन्य अंतरराष्ट्रीय शासनों से महत्वपूर्ण मामलों में भिन्न है: यह अंतर-राज्य बाह्यताओं को विनियमित नहीं करता है या अनुबंध करने वाले दलों के लिए पारस्परिक लाभ का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, और इसकी सुरक्षा के लिए अंतर-राज्य कार्यवाई जुटाने के रूप में कोई पारस्परिक प्रवर्तन नहीं है। व्यक्तिगत अधिकार बहुत महंगे, जोखिम भरे और वैध बनाने में कठिन हैं (मोरावसिक)। मोरावसिक2000; डोनेलीडोनेली2002, 178एफ; सीमन्ससिमंस2009, 121एफएफ; शेफरशेफर2013)। फिर भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बातचीत की गई मानवाधिकार संधियों का अक्सर महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव होता है; यह सिर्फ एक अलग क्षेत्र में होता है, जहां अंतरराष्ट्रीय कानून और राजनीति के छात्र ध्यान देते हैं: घरेलू क्षेत्र। घरेलू कानूनी-राजनीतिक संस्थानों द्वारा वातानुकूलित, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानदंड मुख्य रूप से अपेक्षाकृत कमजोर घरेलू एजेंटों को शक्तिशाली उपकरण प्रदान करके सरकारी नीति को प्रभावित कर सकते हैं। विशेष रूप से, ऐसे घरेलू प्रभाव उत्पन्न करने के लिए मानवाधिकार मानदंडों के लिए, उनका कानूनी रूप महत्वपूर्ण है (डोनेली)। डोनेली2006)। कई राज्यों में, अंतर-राज्य समझौतों के अन्य रूपों के विपरीत, अंतरराष्ट्रीय संधियों के अनुसमर्थन में महत्वपूर्ण घरेलू प्रत्याशित लागत शामिल होती है। संधियाँ घरेलू अभिजात वर्ग के एजेंडे को प्रभावित कर सकती हैं, यहाँ तक कि जहाँ सरकारें उनके उद्देश्य का समर्थन करती हैं; घरेलू अदालतों में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून का उपयोग करने वाले व्यक्तियों और उनके समर्थकों द्वारा राजनीतिक मुकदमेबाजी के लिए खुला; और अधिकारों की संधियों पर दावा करने के लिए व्यापक लामबंदी को बढ़ावा दिया (सीमन्स)। सिमंस2009, चौ. 4)। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून कार्यकर्ताओं को 'राजनीतिक अवसर, सामग्री और मानव संसाधन, निर्माण के लिए शब्दावली और नई पहचान और आंदोलन अभिनेतात्व के स्रोत प्रदान करता है' (त्सुसुई एट अल। त्सुसुई, व्हिटलिंगर और लिम2012, 386)। विशेष रूप से, प्रभाव न तो स्थिर लोकतंत्रों पर और न ही सत्तावादी शासनों पर, बल्कि परिवर्तनशील राज्यों पर सबसे अधिक है, जहाँ सरकार की अंतरराष्ट्रीय संधियों के लिए आत्म-बाध्यता लोकतंत्र और कानून के शासन को मजबूत करने में मदद कर सकती है (मोरावसिक)। मोरावसिक2000; हाफनर-बर्टनहाफनर-बर्टन2012, 268एफएफ)। और जहाँ अधिकारों का दावा करने वाले समूहों के पास 'अपने अधिकारों की सुरक्षा की मांग करने का मकसद और साधन दोनों हैं, जैसा कि अनुसमर्थित संधियों में परिलक्षित होता है' सिमंस2009, 17)।

हितधारकों की गतिशीलता पर जोर देने वाले दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानदंडों पर आईआर छात्रवृत्ति की एक अन्य पंक्ति से भिन्न हैं। आंशिक रूप से हेबरमेशियन संचार क्रिया सिद्धांत से प्रभावित, एक प्रमुख-रचनावादी दृष्टिकोण एक सर्पिल प्रक्रिया के रूप में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानदंडों के प्रभाव को मॉडल करता है (रिसे एट अल। रिस्से, रोप और सिकिक1999; रिस्से एट अल. रिस्से, रोप और सिकिक2013), जिसके द्वारा कार्यकर्ताओं के अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क, उदार राज्यों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को संगठित करते हुए, अधिकारों का उल्लंघन करने वाली सरकारों पर मानवाधिकार मानकों का पालन करने के लिए दबाव डालते हैं - सामरिक रियायतों के माध्यम से इनकार से लेकर वास्तविक अनुनय तक। हालाँकि, बाहरी वकालत पर ध्यान केंद्रित करते हुए, ये मॉडल 'सामाजिक परिवर्तन के लिए मुख्य युद्धक्षेत्र के रूप में घरेलू क्षेत्र के महत्व को कम आंकते हैं' (श्मिज़शमिज़2004, 409) और उन लोगों की एजेंसी को कम महत्व देते हैं जिनकी इस बात में गहरी रुचि है कि कोई सरकार अपनी मानवाधिकार प्रतिबद्धताओं का अनुपालन करती है या नहीं, अर्थात् उस देश में हितधारक (सीमन्स)। सिमंस2009, 356)।

मानवाधिकारों के अभ्यास की ये छवियाँ सह-मौलिकता की प्रवचन-सैद्धांतिक अवधारणा को कैसे सूचित कर सकती हैं? जबकि बेनहबीब सह-मौलिकता को बनाए रखने के लिए आदर्श संस्थागत आवश्यकताओं से समान रूप से जुड़ी हुई है, वह लोकतांत्रिक

पुनरावृत्तियों के माध्यम से न्यायिक राजनीति की धारणा विकसित करके हेबरमास पर भी आगे बढ़ती है, हालांकि इसकी रूपरेखा अस्पष्ट रहती है, यह समझा सकती है कि वास्तविक अधिकार प्रवचन कैसे संचालित होते हैं सार्वभौमिक मानवाधिकार मानदंड, वर्तमान संस्थागत प्रथाओं को बदल सकते हैं। न्यायशास्त्र का तात्पर्य कानूनी प्रवचन की अपने क्षितिज का विस्तार करने की क्षमता से है। ऐसी राजनीति के एक उदाहरण के रूप में, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार मानदंड पहले से ही व्यक्तियों को सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश करने और अधिकारों का दावा करने से बाहर करने में सक्षम बना सकते हैं। बेनहबीब इन प्रक्रियाओं को लोकतांत्रिक पुनरावृत्ति कहते हैं, जिसके माध्यम से मजबूत और कमजोर सार्वजनिक क्षेत्रों में एजेंटों की एक विस्तृत श्रृंखला विशेष राजनीति में सार्वभौमिक, विश्वव्यापी मानदंडों को उचित बनाती है, प्रतिस्पर्धा करती है और अधिनियमित करती है। पुनरावृत्ति केवल दोहराव नहीं है: विषय मानदंडों के अर्थ को फिर से दर्शाते हैं और बदलते हैं क्योंकि वे उन्हें नियोजित करते हैं (बेनहबीब)। बेनहबीब, वाल्ड्रॉन, होनिंग, किम्लिका और पोस्ट (2011, 15), वैश्विक मानवाधिकार मानदंडों (त्सुसुई एट अल) के स्थानीय स्थानीयकरण के अनुभवजन्य अध्ययन में अच्छी तरह से प्रलेखित एक प्रक्रिया। त्सुसुई, व्हिटलिंगर और लिम (2012, 381)। कोई व्यक्ति 'लोकतांत्रिक पुनरावृत्तियों' को एक स्व-सुधारात्मक सीखने की प्रक्रिया के रूप में संवैधानिक परियोजना की हेबरमास की धारणा के विस्तार के रूप में पढ़ सकता है, फिर भी यह मुफ्त के पूर्व-गठित डेमो को नहीं मानता है और खुद को कानून देने के बराबर है। हाल ही में, हेबरमास ने इसी तरह इस बात पर जोर दिया है कि संघर्षों के माध्यम से मानव अधिकारों के मानदंडों का विस्तार कैसे किया जाता है, क्योंकि जिन लोगों ने अपमान, पतन और उत्पीड़न का अनुभव किया है, वे मानव अधिकारों की शब्दावली में अपनी शिकायतें व्यक्त करते हैं (हेबरमास) हेबरमास (2010, 466; फ़ॉर्स्टफ़ॉर्स्ट (2010); सी एफ पिलनपिलन (2011))। ऐसे संघर्षों में नैतिक के रूप में, मानवीय गरिमा, जिसे हेबरमास (हेबरमास 2010, 469) सह-मौलिकता के दावे के प्रतिबिंब के रूप में देखता है, एक आविष्कारक कार्य भी करता है, जिससे पता चलता है कि नए अधिकारों को कहां तैयार किया जाना चाहिए या मौजूदा अधिकारों को पहले से बहिष्कृत समूहों या नई स्थितियों में विस्तारित करने की आवश्यकता है, और अंततः कानून में संहिताबद्ध किया जाना चाहिए।

हेबरमास के अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत के दृष्टिकोण से, सह-मौलिकता के इस अभ्यास-केंद्रित दृष्टिकोण में कई आकर्षक विशेषताएं हैं। सबसे पहले, महानगरीय सुधार के लिए हेबरमास के शीर्ष-भारी मॉडल के विपरीत, सैद्धांतिक फोकस को अधिकार राजनीति की विवेकपूर्ण प्रक्रियाओं और प्रथाओं पर स्थानांतरित करना दोनों निर्दिष्ट करता है कि इस पर कैसे कार्य किया जा सकता है और प्रणालीगत परिवर्तन का तर्क प्रदान करता है: अंतर्राष्ट्रीय के प्रमुख एजेंट मानवाधिकार सुधार में न केवल अनिच्छुक वैश्विक खिलाड़ी या उनके द्वारा बनाए गए निष्क्रिय अंतर्राष्ट्रीय संस्थान शामिल हैं, बल्कि राजनीति के भीतर और बाहर वे व्यक्ति और समूह भी शामिल हैं, जो सामूहिक रूप से समान स्थिति प्राप्त करने के लिए मानवाधिकार मानदंडों को अपनाते हैं। जहां वे सफल होते हैं, राज्य अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों का अधिक लगातार अनुपालन करने के लिए अपने व्यवहार में बदलाव करते हैं। ऐसी हितधारक एजेंसी की शक्ति को अतिरंजित नहीं किया जाना चाहिए - असफलताएं आम हैं और प्रगति अक्सर वृद्धिशील होती है - लेकिन इसे किसी भी सिद्धांत द्वारा नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए जो मानव अधिकारों की राजनीति को समझने का इरादा रखता है।

दूसरा, विशेष रूप से, ऐसे लोकतांत्रिक पुनरावृत्तियों से संकेत मिलता है कि लोकतांत्रिक राजनीति के स्थलों और विषयों को पहले स्थान पर कैसे लाया जाता है। आधुनिक संवैधानिक लोकतंत्र के विकास के अर्ध-ऐतिहासिक विवरण के रूप में हेबरमास के सह-मौलिकता के विवरण में, नियामक राज्य अभी भी अधिकारों और लोकतंत्र दोनों की तुलना में अधिक मौलिक लगता है। हालांकि, यह विवरण इस बात को रेखांकित करता है कि कैसे व्यक्तिगत अधिकार न केवल सकारात्मक कानून की प्रणाली और इसकी लोकतांत्रिक वैधता का उत्पाद हैं, बल्कि स्व-शासित राज्यों की प्रणाली को वैश्वीकरण करने और अधिकार-धारकों के नैतिक ब्रह्मांड और सीमा का विस्तार करने में भी योगदान दिया है। जिन अधिकारों का वे दावा कर सकते हैं। उस अर्थ में, उदार लोकतांत्रिक राज्यों की संस्थाओं द्वारा उन्हें फलने-फूलने की अनुमति देने से बहुत पहले ही अधिकार और लोकतंत्र 'सह-मूल' हैं। बेनहबीब (बेनहबीब, वाल्ड्रॉन, होनिंग, किम्लिका और पोस्ट (2011, 135)) यह सुझाव देते हुए स्वीकार करता है कि एक बार जब हम इस बात पर फिर से ध्यान केंद्रित करते हैं कि नागरिक समाज के कलाकार राष्ट्रीय सीमाओं के पार उपयुक्त अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानदंडों के लिए कैसे जुटते हैं, तो उदार लोकतंत्र और अन्य प्रकार के शासनों के बीच तीव्र मानक अंतर अपनी प्रासंगिकता खोने लगता है। डेविड इंग्राम (इंग्राम 2008) सुझाव देता है कि एक बार जब हम मानव अधिकारों की राजनीति को उस गतिविधि के रूप में समझते हैं जिसके द्वारा पहले से बहिष्कृत व्यक्ति और समूह अपने अधिकारों का दावा करने आते हैं, तो ऐसी आलोचना का लक्ष्य सैद्धांतिक रूप से सार्वजनिक प्राधिकरण का प्रयोग करने वाला कोई भी निकाय हो सकता है, न कि केवल एक ढांचे के भीतर। संवैधानिक राज्य, हालांकि, राज्य ऐसे दावों का प्राथमिक अभिदाता बना हुआ है, क्योंकि बुनियादी अधिकारों के लिए उनकी रक्षा के लिए अधिकृत और सशक्त संस्था की आवश्यकता होती है (रेउस-स्मिटेरेउस-स्मिट (2009, 26; फ़ॉर्स्टफ़ॉर्स्ट (2010))।

तीसरा, अधिकार संघर्षों में विचार-विमर्श की प्रथाओं पर फिर से ध्यान केंद्रित करने से मानवाधिकारों की प्रवचन-सैद्धांतिक अवधारणा को न्यायशास्त्र के आरोप को पूरा करने में मदद मिलती है। आलोचकों का दावा है कि इस बात पर जोर देना कि नैतिक अधिकारों को सकारात्मक कानून में शामिल किया जाना चाहिए, इसका तात्पर्य यह है कि कानून का क्षेत्र राजनीति के क्षेत्र का

अतिक्रमण करता है, जो चिंतनशील नागरिकों को व्यापक सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा के बजाय अदालतों में प्रतिशोध या मुआवजे की मांग करने वाले ऊर्जावान, स्व-इच्छुक वादियों में बदल देता है (इनग्रामइनग्राम2009)। लेकिन अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून के न्यायिक कार्यों को पूरा करने के लिए वैधीकरण महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह स्पष्ट मानक मानक प्रदान करता है जिसे मानवाधिकार अधिवक्ता सरकारों के खिलाफ लागू कर सकते हैं (डोनेली2006) और यह तथ्य कि मानवाधिकार इस तरह से उपयोगी हैं, उनके आकांक्षात्मक मूल्य को भी स्पष्ट करते हैं: वे सामाजिक परिवर्तन और व्यक्तियों की समान स्थिति को प्रभावित करने के लिए कानूनी उपकरण हैं। इस प्रकार, राजनीति को रोकने के बजाय, वैध अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार राजनीतिक लामबंदी और लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा के अवसर प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

चौथा, मानवाधिकारों के लिए संघर्ष के में सह-मौलिकता के दावे की पुनर्व्याख्या करते हुए वैश्विक सुधार के लिए हेबरमास की कठोर योजना का एक विकल्प प्रदान करता है, यह कदम मानव अधिकारों के दर्शन में मौजूदा राजनीतिक अवधारणाओं को चुनौती देने के लिए प्रवचन-नैतिकता दृष्टिकोण को भी अनुमति देता है। नैतिक अवधारणाओं के विपरीत, जो मानवाधिकारों को पूर्व-संस्थागत अधिकारों के रूप में देखते हैं जो व्यक्तियों को केवल मानव होने के आधार पर प्राप्त होते हैं, राजनीतिक अवधारणाएँ समकालीन अंतराष्ट्रीय मामलों में उनकी भूमिका या कार्य का पुनर्निर्माण करके मानवाधिकारों तक पहुँचती हैं (अवलोकन के लिए, बेनेस देखें) बेन्स2009बी ; बुकाननबुकानन2010)। सबसे प्रमुख राजनीतिक अवधारणाएँ मानव अधिकारों को (उदारवादी) राज्यों के बीच एक अंतराष्ट्रीय समझौते के रूप में प्रस्तुत करती हैं जो वैधता के मानकों को निर्दिष्ट करता है: अन्य राज्यों को किसी सरकार को कब बर्दाश्त करना चाहिए, भले ही वह कुछ गैर-उदारवादी प्रथाओं का पालन करती हो और, इसके विपरीत, वे कब कार्रवाई कर सकते हैं, जिसमें प्रतिबंध भी शामिल हैं या हस्तक्षेप, उस सरकार के खिलाफ जो मानवाधिकारों का व्यवस्थित रूप से उल्लंघन करती है या उनकी रक्षा करने में विफल रहती है? जैसा कि मैंने तर्क दिया है, हेबरमास मानवाधिकार के कार्य के इस दृष्टिकोण से सहमत हैं जब वह मानवाधिकार को संयुक्त राष्ट्र नेतृत्व के प्रमुख कार्य के रूप में रखते हैं, जैसा कि बेनहबीब करती हैं जब वह मौजूदा मानवाधिकार शासन का वर्णन मुख्य रूप से अंतरराष्ट्रीय अपराधी के उपकरणों के में करती हैं, मानवतावादी, और शरणार्थी कानून। फिर भी मानवाधिकारों को अंतराष्ट्रीय समझौतों के रूप में परिभाषित करने में, आदर्श रूप से अड़ियल शासन और अधिकारों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ उदार महान शक्तियों द्वारा ऊपर से नीचे तक लागू किया जाता है, प्रमुख राजनीतिक अवधारणाएँ मौलिक रूप से निगरानी करती हैं कि वैश्विक मामलों में मानवाधिकारों के अभ्यास का सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या हो सकता है: यह व्यक्तियों को राजनीतिक प्राधिकार के विरुद्ध अपने अधिकारों की पुष्टि करने के लिए अधिकृत और सशक्त बनाता है (डोनेली)। डोनेली2002 , 12; सी एफ रेउस-स्मिटरेउस-स्मिट2011ए)। यदि हम संघर्षों के में प्रवचन-सैद्धांतिक दृष्टिकोण को फिर से तैयार करते हैं जिसके माध्यम से हितधारक सामूहिक रूप से अपनी समान स्थिति का एहसास करने के लिए दमनकारी अधिकारियों के खिलाफ व्यक्तिगत अधिकारों के बारे में सार्वभौमिक मानदंडों को जुटाते हैं, तो यह प्रमुख राजनीतिक अवधारणाओं के लिए एक गतिशील प्रति-कथा प्रस्तुत करता है, जो यकीनन बेहतर ढंग से पकड़ता है मानवाधिकारों के अभ्यास का वास्तविक, नवोन्मेषी सामाजिक कार्य।

अंत में, यह देखते हुए कि हेबरमास अपने सिद्धांत को एक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में विस्तारित करने के लिए किस तरह से परेशान हैं, आलोचकों ने तर्क दिया है कि उन्हें वैश्विक शासन को प्रवर्तन क्षमता प्रदान करने के लिए विश्व सरकार के किसी रूप को अपनाना चाहिए (शूअरमैन) शूअरमैन2008 ; टिननेवेल्ड और मर्टेंसटिननेवेल्ड और मर्टेंस2009)। हेबरमास एक व्यापक परियोजना में भाग लेता है, जो वैधीकरण सिद्धांत और सर्वदेशीयवाद से प्रेरित है, जो अंतरराष्ट्रीय और राजनीतिक सिद्धांत को राज्य की संप्रभुता के कथित रूप से पहले से ही पुराने वेस्टफेलियन मॉडल से परे पूर्ण, क्षेत्रीय अधिकार (उदाहरण के लिए हेल्ड) के रूप में आगे ले जाना चाहता है। (आयोजित2002)। इस परियोजना पर, एक अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार शासन का उद्भव इस अंतिम सबूत का प्रतिनिधित्व करता है कि महानगरीय मानदंड अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के प्रमुख आयोजन सिद्धांत के रूप में राष्ट्रीय संप्रभुता को नष्ट कर रहे हैं (गुडहार्ट) गुडहार्ट2005 , 132)। हालाँकि, यह प्रदर्शित करने के लिए कि एक महानगरीय परिवर्तन चल रहा है, यह उत्तर-संप्रभुतावादी कथा संप्रभुता शासन के कथित रूप से विस्थापित होने के एक पौराणिक खाते पर टिकी हुई है (रोसेनबर्ग) रोसेनबर्ग2000 , 10)। विशेष रूप से, वह विवरण इस बात की उपेक्षा करता है कि कैसे संप्रभुता, एक गतिशील सिद्धांत के रूप में जिसके द्वारा कानून और राजनीति परस्पर गठित होते हैं, लोकप्रिय संप्रभुता और व्यक्तिगत अधिकारों (रेउस-स्मिट) के वैध प्रवचनों के माध्यम से लगातार पुनः कॉन्फ़िगर किया गया है रेउस-स्मिट2001 ; कोहेनकोहेन2004 ; दहबोरडाहबोर2006)। इस परिप्रेक्ष्य से, लोकतांत्रिक संवैधानिकता को राज्य से अलग करने का उत्तरराष्ट्रीय प्रयास निश्चित रूप से निराशाजनक लगता है (शूअरमैन) शूअरमैन2009)। हालाँकि, मैंने यहां जिस दृष्टिकोण का संकेत दिया है, जो किसी राज्य के संस्थागत ढांचे को लक्षित करने वाले अधिकार जुटाने के कारण और मानक गतिशीलता के साथ सह-मौलिकता के दावे को जोड़ता है, वह कानून और राजनीति के सह-संविधान को कैसे पुनः कॉन्फ़िगर करता है, इसके लिए एक प्रशंसनीय अनुमान प्रदान कर सकता है। संप्रभुता नष्ट होने के बजाय। [17]

संदर्भ

1. मानवाधिकार, एक बहुत ही संक्षिप्त परिचय बाद में इसे एक बेहतर संदर्भ से बदल देता है
2. ^ बेन-नफ्ताली, ओर्ना (2011)। अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी कानून और अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। आईएसबीएन 978-0-19-100160-4.
3. ^ "IHL और मानवाधिकार कानून के बीच क्या अंतर है?" . आईसीआरसी. 22 जनवरी 2015. 21 नवंबर 2023 को मूल से संग्रहीत ।
4. ^ "आईएचएल और मानवाधिकार कानून" । आईसीआरसी. 29 अक्टूबर 2010. 14 फरवरी 2023 को मूल से संग्रहीत ।
5. ^ कोस्केनेमी, मार्टी (सितंबर 2002)। "अंतर्राष्ट्रीय कानून का विखंडन? उत्तर आधुनिक चिंताएँ"। अंतर्राष्ट्रीय कानून के लीडेन जर्नल । 15 (3): 553-579। डीओआई : 10.1017/एस0922156502000262 । एस2सीआईडी 146783448 ।
6. ^ "लक्ष्य 10 लक्ष्य" । यूएनडीपी । 27 नवंबर 2020 को मूल से संग्रहीत । 23 सितंबर 2020 को लिया गया ।
7. ^ वर्डरॉस, अल्फ्रेड; सिम्मा, ब्रूनो (2010) [1984]। "डेर वोल्केरेचल्टिच शुटज़ वॉन मेन्सचेन" [सार्वजनिक अंतर्राष्ट्रीय कानून में मनुष्यों की सुरक्षा]। यूनिवर्सल्स वोल्केरेख्त: थ्योरी अंड प्रैक्सिस [यूनिवर्सल पब्लिक इंटरनेशनल लॉ] (जर्मन में) (तीसरा संस्करण)। बर्लिन: डनकर और हम्बलोत्। पी। 822. आईएसबीएन 978-3-428-13296-6.
8. ^ "ओएचसीएचआर" । 30 मई 2008. 30 मई 2008 को मूल से संग्रहीत । 9 अक्टूबर 2011 को पुनःप्राप्त .
9. ^ "महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर सम्मेलन" । संयुक्त राष्ट्र । 9 अक्टूबर 2011 को पुनःप्राप्त .
10. ^ "ओएचसीएचआर" । 9 मार्च 2008. 9 मार्च 2008 को मूल से संग्रहीत । 9 अक्टूबर 2011 को पुनःप्राप्त .
11. ^ "बाल अधिकारों पर कन्वेंशन" । यूनिसेफ । 9 अक्टूबर 2011 को पुनःप्राप्त .
12. ^ "विकलांग लोगों के अधिकारों पर कन्वेंशन" । संयुक्त राष्ट्र । 30 मार्च 2007 . 9 अक्टूबर 2011 को पुनःप्राप्त .
13. ^ "एयू सदस्य राज्य" । अफ्रीकी संघ. 5 जनवरी 2008 को मूल से संग्रहीत । 3 जनवरी 2008 को पुनःप्राप्त .
14. ^ "एयू संक्षेप में" । 30 दिसंबर 2007 को मूल से संग्रहीत । 3 जनवरी 2008 को पुनःप्राप्त .
15. ^ मानव और लोगों के अधिकारों पर अफ्रीकी चार्टर ।
16. ^ "मानव और लोगों के अधिकारों पर अफ्रीकी आयोग का जनादेश" । 20 जनवरी 2008 को मूल से संग्रहीत । 3 जनवरी 2008 को पुनःप्राप्त .
17. ^ कला. 45.



SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 8.423



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 9940 572 462  6381 907 438  ijirset@gmail.com



www.ijirset.com

Scan to save the contact details